वर्ष 27 अंक 4 अप्रैल - 2025 ₹ 3

हर घर में हिन्दी, हर मन में हिन्दी।

शंबरी

SHABARI SIKSHA SAMACHAR शिक्षा समाचार

अहिन्दी भाषा प्रदेश तमिलनाडु के सेलम से 27 वर्षों से निरंतर प्रकाशित एक मात्र मासिका



कुलच्चिरैयार महान, सदा लिये शिव नाम ।
महान भक्ति अपनाकर, पाये शिव के धाम ।।

உள்ளத்து
உணர்வுகளைப்
பிறரோடு
பகிர்ந்துகொள்ள ...

Pathra Lekhan

சபரியின் கற்போம் கடிதம்

எல்லாச் சூழ்நிலைகளிலும் கடிதம் எழுதுவது எப்படி ..

கடிதம் பல வகைகளில் மனிதனுக்கு உதவி வருகிறது. இமெயில் வருகைக்குப் பின்னும் கடிதங்கள் இன்றும் போற்றப்பட்டு வருகின்றன. நமது அன்றாட வாழ்வில் பயன்படும் பல கடிதங்களை ஹிந்தியில் உங்களுக்காக தொகுத்தளித்துள்ளோம். அதே கடிதத்தை அழகுத் தமிழிலும், ஆங்கிலத் திலும் உங்களுக்காக வழங்கியுள்ளோம்.



JUST
₹150/-
ONLY

SHABARI SHABDHA SAAGAR

Trilingual Dictionary

1632 Pages
Just ₹750.00 Only
51,000 Words

ஹிந்தி
ஹிந்தி
ஆங்கிலம்
தமிழ்
அகராதி

கற்போர் கற்பிப்போரின்
சொல் வளம் பெருகிட
ஹிந்தியோடு தமிழும் ஆங்கிலமும்
தங்களின் நுனி விரலில் தவழ்ந்திட
51,000 சொற்களின் அணிவகுப்பு
சபரியின் தரமானதோர் படைப்பு



வாழ்க்கை பயனுற வானம் வசப்பட
வார்த்தைகளால் வளம் பெற்று சிறந்திட

हर घर में हिन्दी, हर मन में हिन्दी
SHABARI SALEM
ज्ञानात् परं सुखम्

पढ़ो मन भरके

शबरी
शिक्षा समाचार

आजीवन सदस्य
₹ 1000/-
(20 वर्ष)

वर्ष 27, अंक 04 | मूल्य ₹ 3/- | अप्रैल - 2025

प्रधान संपादक
एम. वेंकटेश्वरन
संयुक्त संपादक
आर. जयकरन
सहायक संपादक
आर.जे. संतोष कुमार

कार्यालय
Shabari Siksha Samachar
R.O.: 37, First Agraharam, Salem - 636 001.
A.O.: Shabari Palace,
193 & 194, Second Agraharam,
Salem - 636 001. Tamil Nadu. India.
Phone : 94431-65414, 94433-65414
e-mail : shabarisamachar@gmail.com

संस्थापक व प्रकाशक
Published & Owned by M. Sridhar, on behalf of SHABARI SIKSHA SAMACHAR, 37, First Agraharam, Salem - 636 001 & Printed by D. SivaKumar at Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636001.

समस्त न्यायिक विवादों के लिए क्षेत्राधिकार सेलम होगा । शबरी शिक्षा समाचार में छपी किसी भी सामग्री से संबंधित पूछताछ व किसी भी प्रकार की कार्यवाही प्रकाशन तिथि से एक माह के अंदर की जा सकती है, बाद में किसी भी पूछताछ पर जवाब हेतु बाध्य नहीं । सभी सामग्री से संपादक सम्मत या सहमत हो यह ज़रूरी नहीं ।

SHABARI BOOK SALES
Whatsapp : 9443165414
Office Phone : 9842765414
Office Phone : 9443365414



VANI VIKAS NUMBER
0427-4265414
0427-4552100
Office Hrs : 10.00 AM to 5.00 PM

इस अंक में

संपादक की कलम से 5
अनमोल वचन 6
दादा तुम महान हो 7
सही हैं न ? 8
उम्मीद 10
है ज़रूरी बदलना सोच का 10
परिंदों की दुनिया से सबक 11
लगन है, आध्यात्मिक लगाव 12
नुक्स निकालनेवाले ? 14
जागतिक कल्याण एवं समन्वयी .. 15
धन का लोभ 16
उर काव्य साकार न होता 17
अनपढ़ कौन 18
चमकेगा 20
नारी महान 22
कौन था वह ? 24
महान संत शिव भक्त-तमिल नायनमार 28
खुले में शौच ना ना ना 30
कुंडलिया छंद 31
गुझिया 31
अग्नि 32
श्रम 33
अम्बेडकर 34
खुशी 34
गरिमामयी - नारी 35
वृद्ध की जिम्मेदारी 35
इश्तिहार 36
महिला 36
धरा पावन 37
ओ ! मेरे मीत !..... 37
विचारों की खूबसूरती 38
आत्म-कथ्य 39
जाने कैसा समय भी आया !..... 39
युद्ध चल रहा है 40
नारी 40
चल नाविक, पतवार चला अब । 41
श्री राम 41
विश्व रंगमंच दिवस 42
पाठकों के पत्र 42
नवांकुर 43
पठितम्, अभिरुचितम्, अनूदितम्. 45
தமிழமுது 47
அருள் உலா 48

வாணிவிகாஸ் வாய்மொழித் தேர்வு விவரம்

தேர்வு நடைபெறும் மாதம்	தேர்வு நடைபெறும் தேதி	தேர்வு விண்ணப்பங்கள் வழங்கும் நாள் கடைசி தேதி	₹10/- தாமதக் கட்டணத்துடன் செலுத்த
ஏப்ரல்-2025	20-04-2025	01-01-2025 to 28-02-2025	05-03-2025
ஜூலை-2025	20-07-2025	01-04-2025 to 31-05-2025	05-06-2025
அக்டோபர்-2025	26-10-2025	01-07-2025 to 31-08-2025	05-09-2025
ஜனவரி-2026	18-01-2026	01-10-2025 to 30-11-2025	05-12-2025

வாணி விகாஸ் தேர்வுகளுக்குரிய விண்ணப்பம் மற்றும் தேர்வு கட்டணம் ஆன்லைன் (ONLINE) வாயிலாக மட்டுமே (www.shabari.in) ஏற்றுக் கொள்ளப்படும்.
★ D.D. *மற்றும் மணியார்டர் ஏற்றுக் கொள்ளப்படமாட்டாது.*

Kindly pay exam fee only through
our web portal @ **https://shabari.in**

✍ संपादक की कलम से ...

प्रिय पाठक बन्धुवर, सस्नेह वन्दे ।

परीक्षा के बाद अब गर्मी की छुट्टियाँ आनेवाली हैं । बच्चे बहुत ही खुशी का अनुभव करनेवाले हैं । अभिभावक अब सोचना शुरू कर चुके होंगे कि दो महीने कम से कम एक महीना कैसे काटना है ? क्योंकि आजकल के अधिकांश घरों में पति और पत्नी काम करने जाते हैं । पुराने जमाने के समान सिर्फ पति काम करने नहीं जाता है । आज की नारी अपने पति का साथ देती है । उसका भार कम करने में मदद करती है । या हम ऐसे भी कह सकते हैं कि बढती महँगाई और खर्चा के कारण दोनों को काम करना पडता है ।

आज का जमाना ऐसा हो गया है कि एक साल के बच्चे को स्कूलों या छोटे मोटे केंद्रों में छोडकर माता-पिता काम करने चले जाते हैं । शामको बच्चा घर आता है । उसके साथ उचित मात्रा में समय नहीं बिताया जाता है । इसका असर बच्चे पर जरूर पडता है । माता-पिता अपने काम में जब ध्यान ज्यादा देने लगते हैं तब वे कभी अपने बच्चों के बारे में कुछ सोच नहीं पाते हैं । ना ही उनके बारे में कुछ समझ पाते हैं । रोजमर्रा की जिन्दगी में ऐसे अभिभावक अपने बच्चे के भविष्य को नष्ट कर देते हैं । उनको सही दशा या दिशा देने में असमर्थ ठहरते हैं ।

सम्मिलित परिवार के बच्चों को यह समस्या कभी नहीं होती है । उनको कम से कम दादा-दादी या नाना-नानी का सहारा मिलता है । मामा, काका, चाचा या घर के अन्य बच्चों के साथ रहने से उनका तनाव दूर हो जाता है । अब की बार की छुट्टियों में आप अपने बच्चों को आपके माता-पिता के साथ समय बिताने का मौका दीजिए । चार पाँच दिन भी क्यों न हो आप भी साथ रहिए । रिश्ते सबसे महत्वपूर्ण होते हैं । धन चाहे करोडों में हो अगर मन में शांति नहीं है तो जीवन में कुछ भी नहीं है । यह बात समझ लीजिए । बच्चों का भविष्य उज्जवल बनाये रखने के लिए उनको रिश्तों का मूल्य समझाइए । इसी में भलाई है ।

जय हिन्द ! जय हिन्दी !!



अनमोल वचन

करुणा

तमिल संत महान तिरुवल्लुवर का कहना है – किसी के पास कुछ नहीं होने पर उसे देनेलायक व्यक्ति के सामने ही हाथ फैलाना चाहिए। किसी के मुँह खोलकर माँगने पर सामनेवाला अपने पास रखकर भी न करेगा तो पाप उसी को लगेगा।

किसी के सामने हाथ फैलाने पर अगर वह बिना दुख के मिल जायें तो किसी के सामने हाथ फैलाना भी दुखकर नहीं होकर सुखकर ठहरेगा।

अपने पास जो कुछ भी है उसे नहीं छुपानेवाला उन्नत दिल तथा कर्तव्य भावना से भरे व्यक्ति के सामने अपनी गरीबी के कारण हाथ फैलाना भी गर्व की बात ही है।

अपने पास जो है उसे छुपाकर रखने की बात अपने सपने में भी न सोचनेवाले के सामने असहाय का हाथ फैलाना, दान करने का बराबर है।

अपने धन या संपत्ति या चीज को न छुपाकर समन देनेवाले भलमानस व्यक्तियों के दुनिया में रहने के कारण ही असहाय तथा गरीब उनके सामने हाथ फैलाते हैं।

अपने पास जो है उसे सबसे छुपाकर न रहकर उसे समन दूसरों को देनेवाले को देखते ही विनती करनेवाले या हाथ फैलानेवाले का दुख दूर हो जायेगा।

भला-बुरा न कहकर, उसकी गरीबी पर खिल्ली न उठाकर दान या सहायता करनेवाले सज्जन को देखते ही सहायता माँगनेवाले का दिल खुशी से भर जायेगा।

किसी के सामने अपनी गरीबी या असहायता के कारण हाथ फैलानेवाले अगर इस दुनिया में नहीं होते तो इस दुनिया में जीनेवालों की जिन्दगी काट की पुतली के समान हो जायेगी।

अपने पास आकर हाथ फैलानेवाले के नहीं होने पर दान देनेवालों को कीर्ति कैसे मिलेगी ?

जो हाथ फैलाने पर भी कुछ दे नहीं पाता उसपर हाथ फैलानेवाले व्यक्ति को गुस्सा या नफरत का भाव नहीं रखना चाहिए। उसकी गरीबी ही उसके दुख का कारण है। इसे हाथ फैलानेवाले को समझ लेना चाहिए।

दादा तुम महान हो

– साहित्य रत्न श्री. जेमि,
कोवै, तमिलनाडु



कर कमलों से सबको छूते हो अनुदिन
करते हो सबका शुभारंभ महान प्रतिदिन
तुम्हारे स्पर्श से चमकाता है सबकुछ यहाँ
तुम से ही खिलते हैं सारे फूल नित यहाँ
गर्मी से जगने लगती चलने लगती पृथ्वी
गम दूर कर जग जाती स्फूर्ति सहित धरती
अंधेरा दूर तुमसे हो जाता है भाग जाता है
तुम्हारे ही कारण जगत यह नित जगता है ।



प्यारे फूल खिलते खाने को तरकारी मिलते
प्यारे मीठे फल तैयार होकर भूख मिटाते
हरियाली हर ओर फैल जाती निखर जाती
हर रूप से प्रकृति अपना रूप उसे चमकाती
वन में हो या वासस्थल में जानवर जग जाते
खाने की खोज में वे यहाँ वहाँ जाने लगते
मानव चलने लगते चहूँ ओर काम में लग जाते
दानव अगर हो भी तो दिन में सोने चले जाते ।



दादा तुम महान हो जगते जगाते हो जग को
दादा तुम महान हो शक्ति अपनी देते सबको
गर्मी में इतना गरम तुम हो जाते हो हे दादा
कसम से जब पछताते बहुताधिक दुख अपनाते
पेड पौधे चुस्ती छोडकर खडे रहने लगते हैं
वन्य जीव सारे खाना भूलकर आराम करते हैं
मानव की स्थिति तुम क्यों नहीं समझते हो
मन करता है ठंडे पानी में दिन भर पडा रहने को ।

सही हैं न ?

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार,
कोवै, तमिलनाडु

जमाने के साथ क्या कुछ नहीं बदलता है ? सब कुछ बदलता ही रहता है । इसीलिए लोग बोलते रहते हैं कि जिन्दगी में सब कुछ बदलता है । बदलना ही जीवन है या बदलने पर ही जीवन आधारित है । आजकल के कुछ नये फैशनवाले लडके और लडकियाँ सालों में नहीं महीनों में भी नहीं दिनों में अपने प्रेमि या प्रेमिका को बदल लेते हैं । प्यार करते कि नहीं यह तो पता ही नहीं चलता लेकिन लड जरूर लेते हैं । ज्यादातर एक दूसरे से उब जाते हैं और जब कुछ बनता नहीं तब ब्रेकअप याने एक दूसरे से अलग हो जाते हैं । अलग हो जाने पर पुराने जमाने के हमारे पारु और देवदास के समान जीवन से विरक्त नहीं होते । एक दूसरे के लिए मर नहीं मिटते । रो रोकर आँखें फोड नहीं डालते । यथाशीघ्र एक नये व्यक्ति को अपने जीवन में ला लेते और प्यार का एक नया रूप अपना लेते । अरे ! बदलना ही तो जीना है ।

अमृता की शादी जल्द होनेवाली है । लडके से वह इतना प्यार नहीं करती थी । लेकिन लडका उसके पीछे पडकर उसका दिल जीतने का प्रयास निरंतर कर रहा था । आजकल लडकी नहीं लडका ही लडकियों से तिरस्कृत किया जाता है । उसे डर था कि यह लडकी कभी न न कह दें । एक डेढ महीने के पहले शादी के पहलेवाला फोटोशूट लेनेवाले थे । यह भी तो आजकल का फेशन है । अरे ! बदलना ही जीवन है । लोगों के साथ उनके भीड में चलना ही जीवन है । अमृता फोटो शूट के लिए मनाली पहुँची । साथ में अपनी एक सहेली भी आयी थी । लडका अपने एक दोस्त के साथ पहले ही पहुँच गया था । इन दो नव जोडी के फोटो शूट के लिए दस लोगों का एक दल पहले पहुँच चुका था । पता नहीं आप जानते हैं कि नहीं आजकल ये दस लोग जो बोलते है उसे वर वधु को करना होगा । वह हास्यप्रद भी क्यों न हो ? जमाने के साथ चलना ही होगा न ?

फोटा शूट के बीच दोनों की आँखें मिलीं । हाथ मिले । दोनों गले मिले ।

नाक मिले । दस बारह जनों के सामने दोनों के अधरें मिले । सबकुछ मिले । उन दोनों की इच्छा से नहीं । दस लोगों से बना फोटो समिति के आदेश और मार्ग दर्शन पर । अरे ! बदलना ही जीवन है । समाज के हिसाब से आगे बढने में ही भलाई है भाई । दिन और रात जल और जहाज, थल और आकाश, पेड और एक दूसरे के पेट पर फोटो शूट हो चुका था । अब तो फोटो समिति का मन भर गया । इसलिए उस शामको चारों को साथ बैठने का कुछ समय मिल ही गया ।

चारों साथ बैठे । कुछ खाये पिये । फिर ट्रूथ या डेर खेलने लगे । या तो उनको सच बोलना पडेगा नहीं तो जैसे बोला जाता है वैसे करना होगा । खेल का यह नियम है । अमृता की सहेली उस लडके को जो अमृता के हानेवाले पति के साथ आया था कुछ प्रश्न किया जिससे वह जान सके कि वह उसका भावी पति बनेगा कि नहीं ? अब बारी उस लडके की थी जो साथ में आया था । उसने अमृता से प्रश्न किया – आपको क्या लगता है ? शादी के बाद लडके को पत्नी की बात माननी चाहिए या अपनी माता की ? अमृता अपने होनेवाले पति की आँखों में आँख डालकर बोलने लगी – इसमें पूछने की बात क्या है ? एक लडके के साथ अपना जीवन जीने के लिए लडकी अपना घर भार, माता–पिता, भाई–बहन सबको छोडकर आती है । उसी की बात माननी चाहिए ।

लडका बोला – यह कैसा संभव है ? पत्नी आज आती है । सालों से माता ही लडके की भलाई सोचती है । अमृता ने उससे पूछा – तुम्हारे घर में क्या चल रहा है ? किसे लेकर तुम्हारे घर में कभी कभी अनबन होता है ? लडके ने कहा – सिर्फ एक ही बात में । मेरे पिता माता की बात नहीं दादी की बात ही मानते हैं । यह मुझे पसंद नहीं है । अमृता हँसती हुई बोली – माता कौन है ? पिता की पत्नी तो है ? जो लडका अपने पिता से यह उम्मीद करता है कि वे अपनी माता याने उनकी पत्नी की बात मानें । तो अपनी पत्नी की बात क्यों न मानें ? अमृता की यह बात तीनों को सही लगा । सही हैं न ?



लघुकथा

उम्मीद

– श्री. टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला',
घोटिया-बालोद, छत्तीसगढ़

करीबन साल भर हो गया आफिया के अब्बाज़ान अफ़ज़ल मियाँ का इंतकाल हुए । हर साल अफ़ज़ल आफिया-रियाज की शादी के सालगिरह पर उन्हें मुबारकबाद देने आया करते थे ।

पता नहीं क्यों आज, रियाज को आफिया के चेहरे पर वही उम्मीद दिखी, जो अक्सर सालगिरह के दिन दिखा करती थी । न चाहते हुए रियाज आफिया के करीब गया । सर पर दुपट्टा चढ़ाते हुए बोला – मेरी प्यारी बेगम ! मेरी जान ! न...न...न... ! उम्मीद मत रखो इस दफा । अब्बू जान नहीं आ पायेंगे आज ।

रियाज की बातें सुन आफिया कुछ न बोली । डबडबाई आँखें लिये मुस्कुराती हुई दरवाजे के पास गयी – जानती हूँ रियाज । मेरे अब्बू नहीं आयेंगे । पर मुझे उम्मीद है, हसन मियाँ जरूर आयेंगे । आखिर वह मेरा बड़ा भाई है न । अब तो वे ही मेरे अब्बाजान हैं ।

आफिया को रियाज अचरज भरी निगाहों से देख रहा था ।



है ज़रूरी बदलना सोच का

– प्रो. प्रभा पंत,
हल्द्वानी, उत्तराखण्ड

वक्त नहीं ये चीखने-चिल्लाने का, नारे लगाने-आँसू बहाने, या घबराकर ठहर जाने का । है वक्त, एकजुट होकर कदम बढ़ाने का । गिरते को उठाने का, उठते को शिखर तक पहुँचाने का । बदलना ही होगा हमें-तुम्हें, देश और दुनिया बदलने के लिए किन्तु, बदलने के लिए है ज़रूरी बदलना सोच का ।

बन चुकी है फितरत हमारी घुट-घुटकर जीते रहने की । अच्छा कहलाने की आस में सहने, पीठ पीछे बातें कहने की । चेहरे पर लगाकर नकाब जख़्म दिल के सीते रहने की । कहने को कहते ही आए करने-न करने की बातें लोग । कर सकते हैं मनचाहा हम भी ठान लें यदि, और बदलें सोच ।



परिंदों की दुनिया से सबक

– श्री. त्रिभुवन लाल साहू,
जाँजगीर, छत्तीसगढ़

गाँव में मेरा एक छोटा–सा घर था, जिसके आंगन में नीम के पेड़ थे । हर सुबह एक नन्हीं चिड़िया वहाँ आकर चहचहाती, कभी आंगन में फुदकती, तो कभी डाली पर बैठकर मुझे देखती । उसकी मीठी आवाज़ से मेरी सुबह होती थी । मैं रोज़ उसके लिए दाने डालता, और धीरे–धीरे वह मुझसे हिलमिल गई । अब वह बेझिझक मेरे पास तक आ जाती ।

एक दिन तेज़ आँधी आई । बारिश और तेज़ हवा के झोंका से पूरा गाँव सहम गया । सुबह जब मैं आंगन में पहुँचा, तो देखा कि चिड़िया का घोंसला नीम के पेड़ के नीचे बिखरा पड़ा था । मैं उसे ढूँढ़ने लगा, लेकिन वह कहीं नहीं दिखी । मेरा मन भारी हो गया–क्या वह लौटेगी ? कई दिन बीत गए, पर उसकी चहचहाहट सुनाई नहीं दी ।

फिर एक सुबह हल्की–सी चहचहाहट सुनाई दी । मैंने ऊपर देखा–वह डाली पर बैठी थी ! थोड़ी कमजोर लग रही थी, लेकिन उसकी आँखों में वही चमक थी । कुछ दिनों बाद, वह फिर पहले की तरह चहकने लगी, लेकिन इस बार अकेली नहीं थी–उसके साथ दो नन्हीं चिड़ियाँ भी थीं ! आँधी ने उसका घर उजाड़ दिया था, पर उसने हार नहीं मानी । उसने नया घोंसला बनाया और अपने बच्चों को सुरक्षित रखा ।

हर कठिनाई के बाद एक नई सुबह होती है, और जो अपने सपनों को तिनका–तिनका जोड़कर फिर से संवारने की हिम्मत रखते हैं, वे एक दिन सफलता की उड़ान भरते हैं ।

साहित्यकारों से निवेदन है कि वे स्वरचित, अप्रकाशित रचनाएँ मात्र भेजें । अन्य पत्रिकाओं व सोशियल मीडिया या अन्य जगहों पर प्रकाशित रचनाएँ कभी नहीं भेजें ।



लगन है, आध्यात्मिक लगाव

– श्री. अशोक पटेल 'आशु',
शिवरीनारायन, छत्तीसगढ़

किसी ने ठीक ही कहा है –

''लगन'' एक छोटा सा शब्द है । जिसे लग जाती है उसका जीवन ही बदल जाता है ।

लगन का शाब्दिक अर्थ है –

''लगने का भाव'' या

''ध्यान लगने से है ।''

अर्थात कहा जा सकता है कि –

''एकाग्र भाव से ध्यान या मन लगाने की अवस्था या भाव से है ।''

बात सत्य है यदि हम कोई काम या जिम्मेदारी लेते हैं, तो उसे हम एकाग्र भाव से करें । अपना सारा ध्यान उस पर समर्पित कर दें । उस पर पूरी शक्ति लगा दें । उस काम में इस तरह रंग जाएँ की हमारा ''काम और मैं'' का भाव खत्म हो जाए । मात्र और मात्र लगन का भाव, शेष रह जाए । जिसको कबीर की भाषा मे सुरति–निरति कहा जाता है ।

कबीर कहते हैं कि ''सुरति'' अर्थात् ईश्वर प्रेम रस ''निरति'' में समा गया है । इसे कहते हैं भगवान का सुमिरन अनन्त प्रेम में परिवर्तित हो जाना । और ईश्वर के प्रति जो प्रेम भक्ति थी वह अंतरात्मा में समा गई । बाहरी जगत से नाता टूट गया । अर्थात ''लगन'' लग गई।

जब बात लगन की हो तो मीरा बाई को भला कैसे भूला सकते हैं ।

मीरा बाई को भगवान श्री कृष्ण की भक्ति का ऐसा लगन लगा कि उसके प्रेम की सदा–सदा के लिए दीवानी हो गई । और इस प्रेम–भक्ति को करके वह मीरा बाई अमर हो गई ।

तभी तो कहा गया –

''ऐसी लागी लगन मीरा हो गई मगन
वो तो गली-गली हरि गुन गाने लगी ।।
महलों में पली, बन के जोगन चली ।
मीरा रानी दीवानी कहाने लगी ।।''

मीरा बाई कहती है मुझे ऐसा धन प्राप्त हुआ है जो बहुत ही अनमोल है । और यह ऐसा धन है जो कभी न कम होता है न खर्च होता है । बल्कि जितना खर्च करो वह उतना ही बढ़ता जाता है ।

वो कहती है -

''पायो जी मैंने राम रतन धन पायो
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु
किरपा कर अपनायो ।।''

मीरा बाई भगवान श्री कृष्ण के प्रेम की दीवानी है । और वह इतना प्रेम करती है कि उससे एक पल भी अलग नहीं रहना चाहती ।

वो कहती है मेरे प्रेम के दर्द को कोई नहीं जान सकता, जिसने प्रेम किया है वही समझ सकता है -

''हे री मैं तो प्रेम-दिवानी
मेरो दरद न जाणै कोय ।
घायल की गति घायल जाणै,
जो कोई घायल होय ।।''

मीरा बाई के प्रेम-लगन में भक्ति है । आस्था है । अटूट विस्वास है । समर्पण है । त्याग है, बलिदान है । आध्यात्मिकता है । और उसको ऐसा लगन लगा कि उसने अपना राजसी महल, नाता-रिश्ता, मोह-माया और सारी सांसारिक कामनाओं को त्याग दिया । और अपने आप को जोगन बना लिया ।

अर्थात् भगवान श्री कृष्ण रूपी परमात्मा में आत्मा रूपी मीरा समाहित हो गई । उसे परमात्मा मिल गये । इसे कहते हैं लगन-लगन ।

देह और देश दोनों का ख्याल करो ।



लघुकथा

नुक्स निकालनेवाले ?

– दिनेश गंगराड़े, इंदौर, म.प्र.

एक साहब ने तरबूज का कारोबार शुरू करने का इरादा बनाया, तो दुकान के लिए एक बोर्ड बनवाया जिस पर लिखा था – ''यहाँ मीठे पानी के ताज़ा तरबूज बेचे जाते है ।'' बोर्ड बन कर आया तो कुछ दोस्तों को मदद के लिए बुलाया कि साथ मिलकर भारी भरकम बोर्ड दुकान के ऊपर टांगा जा सके । एक दोस्त ने बोर्ड पढ़ा तो पूछा – ''क्या तुम्हारी इस कारोबार की कोई और ब्रांच भी है ?''

जी नहीं ।

तो फिर यहाँ का लफ़्ज़ ज़्यादा है । अब बोर्ड इस तरह हो गया ।

मीठे पानी के ताज़ा तरबूज बेचे जाते हैं ।

दूसरे दोस्त ने पूछा – क्या इस इलाके में मीठे पानी के अलावा खारा पानी भी होता है ?

जी नहीं ।

तो फिर मीठे पानी का लफ़्ज़ ज़्यादा है ।

अब बोर्ड इस तरह हो गया : ताज़ा तरबूज बेचे जाते है । एक और दोस्त ने पूछा – क्या बासी हुई तरबूज भी बेचोगे ?

जी नहीं ।

तो फिर ताज़ा लिखने की क्या ज़रूरत है, यह लफ़्ज़ ज़्यादा है ।

अब बोर्ड इस तरह हो गया : तरबूज बेचे जाते है । एक और दोस्त ने पूछा – तरबूज मुफ़्त में भी दोगे क्या ? जी नहीं ।

तो फिर बेचे का लफ़्ज़ ज़्यादा है । अब बोर्ड इस तरह हो गया : तरबूज जाते है । एक दाना दोस्त बोले – तरबूज के अलावा भी कुछ बेचोगे ?

जी नहीं ।

तो फिर तरबूज का लफ़्ज़ ज़्यादा है ।

अब बोर्ड इस तरह हो गया : जाते हैं ।

अब सब ने मिलकर ग़ौर किया तो इस बोर्ड का कुछ मतलब समझ नहीं आया, इसलिए बोर्ड को ज़्यादा करार देकर बाहर फेंक दिया गया ।

बिल्कुल इसी तरह हम भी जब कोई काम करते हैं तो मशवरा देनेवाले और नुक़्स निकालनेवाले बहुत से मिलते हैं, मगर हमें चाहिए सिर्फ़ वही काम करें जो हमें बेहतर और अच्छा लगे ।



लघु–आलेख

जागतिक कल्याण एवं समन्वयी भावना के प्रसार की आवश्यकता !

– श्री. वल्लभ यमुनेश्वरी, नैनपुर, म.प्र.

मुझे तेलुगु कवि श्री. टी. विनय बाबु की ये पंक्तियाँ अकस्मात स्मरण आ रही हैं –

''ना देशं ,भारत देशं !
संस्कृति निलयं, भारत देशं !
सम्पदा निलयं, भारत देशं !
अनेक भाषाला प्रतिरूपं, भारत देशं !''

कहने का तात्पर्य यह है कि हमारा भारत देश सांस्कृतिक वैविध्य से समृद्ध है । अनेक प्रकार की सम्पदाओं का आगार है । हमारे देश के नैसर्गिक एवं मानवीय संसाधन उत्कृष्ट हैं । हमारा देश अनेक भाषाओं, विभाषाओं और बोलियों का प्रतिरूप है । पर विडंबना यह है कि आज देश संकुचित दुराग्रहों का सामना कर रहा है । आज भाषावाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद और साम्प्रदायिकता बढ़ती जा रही है । सियासती स्वार्थलिप्सा, संकुचित विचारों को बढ़ाती है । फिर भी ऐसे व्यक्ति भी विद्यमान हैं जो सांस्कृतिक समन्वय एवं राष्ट्रीय एकता के प्रति समर्पित हैं ।

एक तेलुगु कहावत है – ''मनसु उंटे मार्गं !'' अर्थात् दृढ़ इच्छा शक्ति अपना मार्ग स्वयं खोज लेती है । यदि सभी में राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना हो तो हम सांस्कृतिक समन्वय की सुरभि से आनंदित हो जाएँगे । अन्तरजातीय, अन्तरधार्मिक, अन्तरप्रान्तीय एवं अन्तरभाषायी विवाहों को प्रोत्साहन राष्ट्रीय एकता के मार्ग में सार्थक पहल होगी । विविध भाषाओं के साहित्य का आपस में अनुवाद एवं रूपान्तर साहित्यिक समन्वय की दिशा में श्रेष्ठ कदम होगा । मैं यही आशा करता हूँ कि हम सभी देशवासियों में भारतीयता की भावना का शाश्वत संचार होता रहे । हम जागतिक कल्याण की भावना को संबल प्रदान करते रहेंगे ।



बोधकथा

धन का लोभ

– श्री. राजेन्द्र परदेसी,
लखनऊ, उ.प्र.

एक राजा रात–दिन अपने राजकोष को बढ़ाने की चिंता में डूबा रहता था, वह अपने परिवार के सदस्यों के बीच बहुत कम समय दे पाता था, इससे उसकी रानी दुखी रहा करती थी, एक दिन की बात है, रानी ने राजा से कहा – आप रातदिन अपना कोष बढ़ाने में व्यस्त रहते हैं, इससे न तो आपको और न परिवार के सदस्यों को ही शांति मिल रही, इससे अच्छा तो महल के सामने उस झोपड़ी का परिवार है जो दिन भर काम करने के बाद जब रात को वापस आता है तो रूखा सूखा भोजन कर गाने–बजाने में लीन होता है और निश्चिन्त हो कर सोता है ।

रानी की बातो को सुनकर राजा ने कहा – कहो तो मैं कल ही उनका गाना–बजाना बंद करा दूँ ।

रानी बोली – नहीं, आप राजाज्ञा निकाल देंगे और वह गरीब आदेश का उल्लंघन करेगा तो उसे दण्डित करेंगे, मैं ऐसा नहीं चाहती ।

यह सुनकर राजा ने कहा – उस पर कोई अन्याय नहीं किया जायेगा बल्कि वह खुद ही अपनी इच्छा से यह सब बंद कर देगा ।

दूसरे दिन राजा ने छोपडीवाले को बुलाकर कहा – मुझे मालूम हुआ है कि तुम्हारे पास धन नहीं है, किसी तरह टोकरियाँ बनाकर अपना गुजर बसर करते हो, इसलिए तुम पाँच सौ स्वर्ण मुद्रा इस शर्त पर ले जा सकते हो कि एक साल बाद इन्हे तुम वापस कर दोगे ।

उस व्यक्ति ने राजा की शर्त को ख़ुशी से स्वीकार कर लिया और पाँच सौ मुद्रा लेकर अपना काम बढ़ाने लगा, उसके परिवार के सभी लोग अब देर रात तक काम करते रहते, जिससे राजा को मोहरो लौटाने के समय के पहले ही काफी संपन्न हो जाये हम, इस कारण अब उस परिवार को गाने–बजाने का भी

समय नहीं मिल पा रहा था ।

कुछ दिनों बाद रानी ने अनुभव किया कि सामनेवाली झोंपडी में अब पहले की तरह अमोद-प्रमोद नहीं होता, उन्होंने सोचा कि राजा ने मेरे कहने पर उन्हें मना कर दिया होगा, एक दिन सच्चाई को जानने के लिए रानी वेश बदल कर उधर देखने गयी तो वहाँ कुछ दूसरा ही दृश्य था, वापस आकर वह राजा से बोली - आप ने उस झोपड़ी में रहनेवालो को क्या आदेश दिया है जो गाना बजाना समाप्त हो गया है ।

जब राजा ने विस्तार से सारी बात बताई तो रानी ने कहा - सच है धन का लोभ आदमी को इतना बदल देता है कि उसे बढ़ाने के फेर में वह अपनी शांति से भी हाथ धो बैठता है ।

उर काव्य साकार न होता

- डॉ. परमानन्द लाभ, समस्तीपुर, बिहार

अंतर की लुकाछिपी में अगर तुम्हें अधिकार न देता,
आलिंगन-विरह का भास न होता, उर काव्य साकार न होता ।।
अंतर कानन में अगर न होता मधु माधव का गुंजार यहाँ !
खिलते जो नहीं सरसिज तो भौंरे का होता संचार कहाँ !!
कोयल कूकती वहाँ जहाँ हरा झाँझर सहकार जो होता,
चातक की प्यास तो तब मिटती स्वाति-कण प्रसार जो होता ।
बंधता है प्रेम-डोर में चन्द्रमा, कुमुद का प्यार जो होता,
निकट-दूर का अहसास न होता, उर काव्य साकार न होता ।।



होता कैसे हृदय-प्लावन, कविता रचना होती कैसे ?
सदियों से मुर्झाई बगिया, वाला कांति पाती कैसे ?
मैं लिखता ग्रंथ कभी क्या रात्री की मसि काली से ?
कैसे होता हृदय में जागरण भोर की सुनहरी लाली से ?
विद्यापति के मंजुल तानों पर मैथिल ललना का लाभ अभिसार न होता,
आलिंगन-विरह का भास न होता उर काव्य साकार न होता ।।

अनपढ़ कौन

– श्री. निलेश
जोशी 'विनायका',
पाली, राजस्थान



उजाला है उस कमरे में आज
जहाँ अक्सर अंधेरा रहता है
सब अपने-अपने कमरे में मस्त रहते हैं
या यूँ कहें कि अस्त व्यस्त रहते हैं ।
कारण जानना चाहा तो पता चला कि कल इम्तिहान है
उसे चिंता है पास होने की
आगे बढ़ने की
इसलिए पढ़ना है
पारंगत होना है
आगे बढ़ना है
कल इम्तिहान देना है ।
इम्तिहान देने पर डिग्रियाँ मिलेगी
विद्वत्ता की
बुद्धिमता की
आदर्श की
कुशलता की
जिसके पास जितनी डिग्रियाँ होंगी
वह उतना ही बुद्धिमान माना जाएगा
विद्वान माना जाएगा
पारंगत माना जाएगा
कुशल माना जाएगा
पढ़े लिखो में गिनती होगी
डिग्री धारी व्यक्ति पुल बनाता है
जो उद्घाटन से पहले ही ढह जाता है
डिग्री धारी व्यक्ति डॉक्टर बनता है
इलाज करता है
कैंची मरीज के पेट में ही छोड़ जाता है
डिग्री धारी व्यक्ति वृद्ध आश्रम बनवाता है
अपने माँ-बाप को उसमें छोड़ जाता है
डिग्री धारी व्यक्ति नेता बनकर देश की जनता को लूटता है
भ्रष्टाचार का ठीकरा कभी न कभी तो फूटता है

डिग्री धारी व्यक्ति भ्रष्टाचार करता है
जेल जाने से भी नहीं डरता है
डिग्री धारी व्यक्ति ही आतंकी बनकर हजारों बेगुनाहों की जान लेता है
मानवता का दुश्मन बन हथियार थाम लेता है
डिग्री धारी व्यक्ति ही दीमक बनकर देश को खोखला करता है
डिग्रियाँ पाकर आदमी की आत्मा मर जाती है
डिग्रियाँ पैसों से खरीदी जाती है
शिक्षा के मंदिर में चलनेवाला ये सफेद गोरख धंधा है
नेताओं को इसी से तो मिलता चुनावो में चंदा है
आज शिक्षा की गुणवत्ता शिक्षक से नहीं संस्थान के भवन से मापी जाती है
फीस का पूर्ण भुगतान होने पर ही डिग्रियाँ बांटी जाती है
लेकिन शिक्षा कभी बाजारों में बिक नहीं सकती
ना ही शिक्षा खरीदी जा सकती है
ये तो गुरु के चरणों में बैठकर निष्ठा से पाई जा सकती है
इसका कोई मोल नहीं है और ना ही कोई पैमाना है
जिसकी आत्मा जिंदा है उसी ने इसको जाना है
काश....
चरित्र की भी कोई डिग्री होती
व्यवहार की भी कोई डिग्री होती
आत्म गौरव की भी कोई डिग्री होती
आत्म सम्मान की और स्वाभिमान की भी कोई डिग्री होती
ईमानदारी, नैतिकता और वफादारी की भी कोई डिग्री होती
क्या वे लोग अनपढ़ थे ?
जिनके द्वारा सदियों पहले बनाए पुल आज भी जिंदा है
जो आदमी की नब्ज देखकर ही मर्ज बता देते थे उनके ज्ञान पर हम आज भी शर्मिंदा है
प्राकृतिक उपचार से गंभीर रोगों का इलाज किया करते थे
आदमी रोगी बने ही नहीं इसलिए योग किया करते थे
विपरीत खान पान का परहेज किया करते थे
प्रकृति के साथ जिया करते थे
वे लोग अनपढ़ थे शायद इसीलिए देश हित में जिया करते थे ।

चमकेगा

– श्री. अवनीश कुमार गुप्ता 'निर्द्वंद',
प्रयागराज, उ.प्र.



बैठा छात्र परीक्षा कक्ष में, मन में दुख हज़ार ।
अपनों के ताने भारी, जीवन बना पहाड़ ।।
उत्तर लिखता कांपता, प्रश्न लगे तलवार ।
मन का दर्द न जाने कोई, आँखों में अंगार ।।
सपनों की गाथा लिपटी, अश्रु बने संवाद ।
जीत–हार के बीच में घूमें, मन का अनुवाद ।।
सालों का परिश्रम लाया, भीतर एक तूफान ।
चुप रहकर भी मन बोले, हो जाए पहचान ।।
घर–परिवार की आस बड़ी, बढ़ा दबाव पहाड़ ।
हर उत्तर में दर्द छिपा है, कौन करे उपचार ।।
तन अकेला बैठे कक्ष में, संग है भीड़ अजान ।
समाज–परायों के ताने, करते हैं अपमान ।।
खुद से लड़ता, खुद से जीतें, मन का भी है युद्ध ।
हर सांसें अब थकी–थकी सी, कौन सुने ये सुध ।।
जीवन जैसे परीक्षा भारी, हर कदम है भार ।
सपनों के संग चलते–चलते, टूटे मन की डोर ।।
कागज़ पर लिखता जो, वो दर्द का एक रूप ।
हर अक्षर बन बहता जीवन, जैसे कटता धूप ।।
मन का घाव छिपा नहीं, आँखों में झलके नीर ।
जीत–हार की रेखा पतली, उलझा मन अधीर ।।
परीक्षा कक्ष में बैठे तन, भीतर चलता रण ।
छात्र नहीं, वो दर्द समेटे, चलता एक सपन ।।
कब समझेगा ये समाज अब, छात्रों का ये हाल ।
हर उत्तर में घाव छुपे हैं, हर अक्षर में जाल ।।
परीक्षा केवल शब्द नहीं, जीवन का आधार ।
छात्र का हर दिन तपता जैसे, सूरज की तकरार ।।

सपनों संग वो लड़ता हर पल, जूझे खुद से रोज ।
दुख-सुख संग जो चलता है वो, बने समय का बोज ।।
मन में उठती आशा फिर भी, संघर्षों के पार ।
हर विफलता सिखा रही है, नया कुछ हर बार ।।
पथ कठिन है, पांव थके हैं, फिर भी आगे बढ़ ।
सपनों की जोत जलाकर, हर अंधियारा हट ।।
छात्र वही जो हार न माने, लड़े समय के साथ ।
पर्वत को भी झुका दे जो, बने विजय की बात ।।
संघर्षों का रूप ही जीवन, ये मत भूलो आज ।
हर मेहनत का फल मिलेगा, होगा सपना साज ।।
जीवन रण है, जो डर जाए, वो पीछे रह जाए ।
जो बढ़ता हो हर बाधा पर, विजय वही पाए ।।
अश्रु पोंछकर खड़ा हो अब, लिख दे इतिहास ।
तेरे हाथों में छिपा है, तेरे भाग्य का प्रकाश ।।
मन में जो विश्वास जलेगा, तूफान थम जाएगा ।
जीवन का ये कड़ा सफर, विजय गीत गाएगा ।।
तेरी मेहनत है जो संजोई, उसे समय देगी मान ।
सपनों को सच कर दिखा, तू बना ले अपनी पहचान ।।
पंक्तियाँ तेरी, श्रम है तेरा, तुझसे बने सब राह ।
हर सफलता तेरा इंतजार करे, बढ़ा तू निडर आज ।।
हर कठिनाई को पार कर, तू नित नया इतिहास रच ।
तेरे हौसले की उड़ान से, हर सपना होगा सच ।।
पंखों में शक्ति है तेरी, तू आकाश की ओर उड़ ।
हर मुश्किल को पार कर, तू बनेगा विजय का तूफान ।।
हर दर्द की गहरी रात के बाद, सुबह का सूरज आएगा ।
तेरी मेहनत और विश्वास से, सपनों का सच होगा ।।
तू है वीर, तू है योद्धा, समय तेरे साथ चलेगा ।
हर संघर्ष से जीतकर, तेरा सूरज चमकेगा ।।



विश्व नारी दिवस पर समस्त परम पूज्य महिलाओं को शत-शत नमन

श्री गणेशाय नमः

नारी महान

– श्री. देवी प्रसाद मिश्र, नई दिल्ली

नारी तुम नर की जननी ही नहीं दिग्दर्शक, पथप्रदर्शक हो ।
जीवन भर नर की संरक्षक, प्रतिपालक, उद्धारक हो ।।
नारी तुम न केवल नर से मात्राओं में भारी हो ।
आजीवन नर तुम्हारा कृतज्ञ और आभारी है ।।
तुम नर का जीवन हो, उसके जीवन की संजीवनी हो ।
प्रति पल आजीवन नर की कवच और आभूषण हो ।।
माँ रूप में पालती-पोषती,निष्काम उसे दुलारती हो ।
ककहरा सिखाती, डॉक्टर, इंजीनियर, आईएएस बनने का ख्वाब दिखाती हो ।।
नित-नित मानवीय मूल्यों का पाठ उसे पढाती हो ।
उसके ख्वाबों की पूर्ति हेतु अहर्निश अनवरत, अथक परिश्रम करती हो ।।
सुशिक्षित, संस्कारी कन्या खोज उसे वैवाहिक जीवन में बांधती हो ।
स्वरूप बदल भार्या रुप में तुम नर के जीवन में आती हो ।।
प्रेमपाश में बांध उससे नाना कौतुक करवाती हो ।
मात-पिता सेवा, बाल-गोपाल चर्या का सामाजिक बोध कराती हो ।।
नित नव-नव सामाजिक मूल्यों का अभिनव ज्ञान सिखाती हो ।
जीवन के संघर्ष-चक्र में अडिग रह उसकी राह संवारती हो ।।
दुर्गम, दुरुह संघर्ष-पथ पर उसके साथ सदृश हिमालय अटल खड़ी दिखती हो ।
जीवन के सुख-दुख में प्रतिक्षण उसकी छाया बन विचरण करती हो ।।
दुस्तर से दुस्तर दुर्गम जीवन पथ पर अविरल कलकल बहती हो ।
न हारती हो न थकती हो नर को प्रति पल ऊर्जस्वित करती रहती हो ।।
सर्वस्व न्योछावर कर अपना नर को आजीवन आनंदित करती हो ।
बड़े-बड़े कष्टों, अपमानों को नर के ही खातिर सह लेती हो ।।

अपने अरमानों को दबा जमीं में नर हेतु अट्टालिकाएँ बनाती हो ।
उसके अरमानों, आकांक्षाओं में ही अपना निष्पाद्य तलाशती हो ।।
अपनी हर आकांक्षा- महत्वाकांक्षा का संधान नर के कंधों के तूणीर से करती हो ।
करने में सब कुछ सक्षम हो, नर से सौ गुना बलशाली हो, गुण शाली हो ।
पर बार-बार सारी सफलताओं का सेहरा नर के सिर पर लहराती हो ।।
भगिनी, दुहिता दो और रूप में तुम उसका हित चिंतन करती हो ।
भगिनी बन उसके शौर्य एवं पुरुषार्थ का नित नव परिष्कार करती हो ।।
दुहिता रूप में आकर तुम दादी माँ का भाव दिखाती हो ।
उसके भोजन और पहनावे का प्रतिपल निगरानी रखती हो ।।
पिता रूपी नर को बहुविध मानव जीवन के दायित्वों, एहसासों का बोध कराती हो ।
डोली में बैठ निष्ठुर, कर्कश, पाषाण हृदय पिता को अविचल-अविकल कर देती हो ।।
चट्टान सदृश अडिग कठोर अनुशासनवाले बापू की निष्ठुर आंखों को छलका देती हो ।
नारी तुम्हारे किस-किस रूप का करूँ वर्णन, हर रूप में तुम नर के लिए वरदान हो ।।
तुम नर का संबल हो, स्पंदन हो, नित नव अभिलाषाओं का चिंतन हो ।
तेरे बिना नर, नर नहीं, यथा पृथ्वी पर पशु समान है ।
तुम्हारे बिना नर का जीवन निष्फल ही नहीं, निस्सार है ।
जिस नर के जीवन में तुम नहीं वह बनता नहीं नेक इंसान है ।
नारी तुम्हारा हर रूप नर का पथप्रदर्शक, मार्गदर्शक, संचालक है ।
नर की हर इच्छा अभिलाषाओं की तुम दिग्दर्शक हो ।
तुम चिर-चिरंतन से नर का सर्जक हो,आकर्षण हो ।
नारी तुम नर की जननी ही नहीं, पथप्रदर्शक हो ।
जीवन भर नर की संरक्षक, प्रतिपालक, उद्धारक हो ।
नारी तुम महान हो, नारी तुम महान हो ।
जय भारत ! जय भारती !!



कौन था वह ?

– श्री पारस कुंज,
भागलपुर, बिहार

एक राष्ट्रकवि का मारा जाना
क्या है हकीकत क्या है फसाना ।
कहते हैं कि, उन्नीस सौ तिरसठ में
एक कवि को सिर्फ इसलिए
जहर देकर मार दिया गया था कि,
वह जब भी कहता सच ही कहता
सच के सिवा कुछ नहीं कहता ।
वह जब कहता देश की अस्मिता
उसकी सुरक्षा और राष्ट्र के
नव–निर्माण की बात कहता ।
एक देश, एक राष्ट्र, एक राष्ट्रभाषा
की बात कहता ।
जो कभी सत्ता के गलियारे में भटका
न किसी का प्रशस्ति–गान किया,
और ना किसी की चाटुकारिता ही की ।
बल्कि वह जब तक जीया
एक आजाद पंछी की तरह
पूर्ण अस्मिता सहित स्वाभिमान,
और आन–बान–शान के साथ
राष्ट्र की पहचान बनकर जीया ।
वह जब मंचों पर खड़ा होता,
तो उसके सामने अच्छे–अच्छे
चाँद सितारे भी ध्वस्त हो जाते ।
कइयों को उसने, गीत लिखना सिखाया
बहुतों ने उसकी भाव–भंगिमा अपनाई
कइयों ने तो उसके गीतों को भी चुराया
और अपना बता मंचों पर सुनाया ।
कहते हैं कि, मारे जाने से पूर्व
अपनी ओजपूर्ण–वाणी और
राष्ट्रभक्ति रचनाओं के गायन से
वह इतना लोकप्रिय हो चुका था कि,
सिर्फ उनके नाम की भनक से ही
चंद–घंटों में सुनने वालों का
जन–सैलाब उमड़ पड़ता था ।
रात–रात भर कौन कहे, भोरम–भोर
तक
श्रोता उठने का नाम न लेता
सबकी जुबान पर रहता तो
बस एक, उसी का नाम रहता ।
कहने वाले यहाँ तक कहते कि
उसके सामने राष्ट्र–नायकों तक कि
छवि धूमिल पड़ने लगी थी ।
तभी उसकी 'हत्या की खबर'
जंगल में लगी आग की तरह
पूरे देश में सर्वत्र फैल गई ।
जिला–प्रशासन की कौन कहे
उसने तो राज्य–सरकार तक
को हिला कर रख दिया था ।
ऐसे हालत में –
राजा करे, तो क्या करे ?
सोच पाना बड़ा ही कठिन था ।
आनन–फानन में,
उनके लिखित या मौखिक आदेश पर

सर्वप्रथम उसके पार्थिव-शरीर
को 'हिरासत' में लिया गया ।
परिजनों को बुलाने के नाम पर
दिमागी-कसरत चलाई गई,
पर न तो वे आए और न
उन्हें लाया ही गया ।
जबकि राजा चाहता तो
उन्हें लाया जा सकता था ।
सबकुछ जान पोस्टमार्टम तो बनता
ही था
पर तथाकथितों के कहने पर कि -
'रा... ष्ट्र ... क ... वि' का
पोस्टमार्टम ?
न होने दिया और न कराया ही गया ।
जीवितावस्था से मरणोपरांत
या यों कहें कि आजतक
उसे, न तो कोई राष्ट्रीय-सम्मान मिला
और न ही कोई पुरस्कार ।
पर, वाह री जनता !
उसने कवि को अपने सर-आँखों पर
बिठाया और उसे 'राष्ट्रकवि' बनाया ।
ऊँहापोह की स्थिति से बाहर निकल
तब राजा को ख्याल आया ।
कहते हैं कि, करीब बीस-घंटे तक
मृत-शरीर को 'हिरासत' में रखने के बाद
'राष्ट्रध्वज में लिपटा कर' उसकी
शव-यात्रा निकलवाई गई ।
जिसमें सैकड़ों छोटे-बड़े
साहित्यकारों
सहित हजारों का जन-सैलाब उमड़
आया था ।
तब कहीं जाकर बंदूक की सलामी
और पूर्ण राजकीय-सम्मान के साथ
उसकी अंत्येष्टि करवाई गई ।
कहते हैं कि -
उसकी पुकार पर तब
हिमालय भी पिघल गया था
और एक हम हैं कि
आज तक नहीं पिघले ।
क्या पता है आपको !
कौन था वह ?
मुझे तो ज्ञात नहीं !
आज तक, उसके बारे में
सिर्फ सुनता ही आया हूँ
पर, तलाश जारी है !
यदि पता हो आपको ?
तो राष्ट्र को बतायें और
राष्ट्र-नायकों को भी ।
इतने वर्षों बाद, शायद अब भी
उनकी आँखों से पश्चाताप के
आँसू छलक जाएँ !
जिसका वह हकदार था
उसके लिए कुछ कर जाएँ ?
क्यों कि -
मिट्टी के हर पुतले को है, मिट्टी में मिल
जाना
जो करना है कर ले होगा, लौट के फिर
न आना !

சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான்

சபரி பேலஸ், 193, இரண்டாவது அக்ரஹாரம்,
சேலம்-636001. & 0427-4265414 0427-4552100
Website : https://shabari.in

வாணி விகாஸ் – ஓர் பார்வை .....

உங்களின் கேள்விகளுக்கு இதோ எங்கள் பதில்கள் .....

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்குரிய விண்ணப்பப் படிவங்கள் சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தானின் உறுப்பினர்களுக்கு மட்டுமே வழங்கப்படும். வருடாந்திர உறுப்பினர் கட்டணம் ரூ.100/-

வாணி விகாஸ் தேர்வு எதற்காக நடத்தப்படுகிறது ?

வாணி விகாஸ் என்பதின் பொருளிலேயே இந்த வினாவிற்கான விடை இருக்கிறது. ஹிந்தி பேசத் தெரியாதவர்களை ஹிந்தியில் பேசவைப்பதே வாணி விகாஸ் தேர்வின் முதல் நோக்கமாகும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு யாரால் நடத்தப்படுகிறது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வு சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தானால் நடத்தப்படுகிறது.

வாணி விகாஸ் தேர்வு வாய்மொழித்தேர்வா அல்லது எழுத்துத்தேர்வா ?

பேச்சாற்றலை வளர்ப்பதே வாணி விகாஸின் கொள்கையாகும், எழுதுகின்ற வேலை இதில் கிடையாது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கான குறைந்தபட்ச வயது என்ன ?

எட்டு (8) வயது பூர்த்தியடைந்த அனைவரும் வாணி விகாஸ் தேர்வில் பங்கேற்கலாம். வாணி விகாஸ் தேர்வின் முதல் நிலை தேர்வில் பங்கேற்பவர்கள் விண்ணப்பத்துடன் தங்கள் பிறப்பு சான்றிதழ் நகலினை கட்டாயம் இணைக்க வேண்டும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கான அடிப்படை கல்வித் தகுதி என்ன ?

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கென அடிப்படைக் கல்வித் தகுதி ஏதும் தேவை இல்லை.

வாணி விகாஸ் தேர்வு எந்தெந்த மாதங்களில் நடைபெறுகிறது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வு ஜனவரி, ஏப்ரல், ஜூலை மற்றும் அக்டோபர் மாதங்களில் நடைபெறுகிறது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுகள் எத்தனை நிலைகளைக் கொண்டது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வானது எட்டு நிலைகள் கொண்டது.

வாணி விகாஸ் தேர்விற்கு தனியான பாடப்புத்தகம் உள்ளதா ?

வாணி விகாஸ் எட்டு நிலைகளுக்கும் தனித்தனியே பாட புத்தகங்கள் உள்ளது.

வாணி விகாஸ் தேர்வில் ஒவ்வொரு நிலையாகத் தான் பங்கு பெற முடியுமா ?

ஆம். வாணி விகாஸ் தேர்வில் ஒவ்வொரு நிலையாகத் தான் பங்கு பெற முடியும். ஒரே சமயத்தில் இரண்டு நிலைகளுக்கு விண்ணப்பிக்க இயலாது. நேரடியாக இரண்டாவது அல்லது அதற்கு அடுத்த நிலைக்கோ விண்ணப்பிக்க இயலாது. இரண்டாவது நிலையிலிருந்து எட்டாவது நிலை வரை விண்ணப்பிப்பவர்கள் தாங்கள் தேர்ச்சி பெற்ற முந்தைய நிலையின் 10 இலக்க தேர்வு எண்ணை (10 Digit Exam Register Number) தேர்வு விண்ணப்பத்தில் தெளிவாக எழுதி அனுப்பவேண்டும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு மையங்கள் எங்கெங்கு உள்ளன என்று தெரிந்து கொள்ளலாமா ?

வாணி விகாஸ் தேர்வில் குறைந்தது 30 மாணவர்கள் இருந்தால் உங்கள் இடத்திலேயே தேர்வு மையம் அமைக்கப்படும். அதற்கும் குறைவாக 10 முதல் 29 வரை உள்ள நிலையில் தேர்வுமையக் கட்டணமாக ரூ.500 செலுத்த வேண்டும். **அவ்வாறான நிலையில் மற்றவர்களிடம் பயிலும் ஒரு சில மாணவர்கள் எவ்வித முன்னறிவிப்பின்றி தங்கள் தேர்வு மையத்தில் பங்கேற்பார்கள்.** தேர்வுமையக் கட்டணத்தை எக்காரணத்தைக் கொண்டும் திருப்பித் தர இயலாது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கு மதிப்பெண் பட்டியல் மற்றும் சான்றிதழ் உள்ளதா ?

ஆம், உள்ளது. வாணி விகாஸ் தேர்வு முடிந்து 30 நாட்களுக்குள் தேர்வு மதிப்பெண் பட்டியல் மற்றும் 60 நாட்களுக்குள் சான்றிதழ் அனுப்பி வைக்கப்படும். தேர்வு முடிவுகள் www.shabari.in-ல் வெளியிடப்படும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு யாரால் நடத்தப்படும் ?

சபரியால் தேர்ந்தெடுக்கப்பட்ட அனுபவமிக்க ஆசிரியர்களால் தேர்வு நடத்தப்படும்.

இத்தேர்வுக்கான மாதிரி வினாத்தாள் உள்ளதா ?

பாட புத்தகத்தின் கடைசிப்பக்கத்தில் மாதிரி வினாத்தாள் உள்ளது.

வாணி விகாஸ் தேர்வு மாணவர்களுக்கு பயனுள்ளதா ?

ஹிந்தியின் இமாலய வளர்ச்சி மற்றும் பயனுள்ள பயிற்சியில் மாணவர்கள் நிச்சயம் பலன் பெறுவர்.

புத்தகம் மற்றும் தேர்வுக் கட்டண விபரம் :

தேர்வின் பெயர்	கட்டணம்	தேர்வின் பெயர்	கட்டணம்
வாணி விகாஸ் நிலை-1	₹ 250.00	வாணி விகாஸ் நிலை-5	₹ 290.00
வாணி விகாஸ் நிலை-2	₹ 260.00	வாணி விகாஸ் நிலை-6	₹ 300.00
வாணி விகாஸ் நிலை-3	₹ 270.00	வாணி விகாஸ் நிலை-7	₹ 310.00
வாணி விகாஸ் நிலை-4	₹ 280.00	வாணி விகாஸ் நிலை-8	₹ 320.00

தேர்வுக் கட்டணம் செலுத்துவது எப்படி ?

தேர்வு கட்டணத்தை https://shabari.in என்கிற எங்களது இணையதளத்தின் வாயிலாக மட்டுமே செலுத்தவும்.

வாணிவிகாஸ் தேர்வுகளுக்கு (ஜனவரி [அ] ஏப்ரல் [அ] ஜூலை [அ] அக்டோபர் மாதங்களுக்கான தேர்வுகளுக்கு) குறைந்தபட்சம் ஒரு முகவரி (சபரி IDயில்) 10 மாணவர்கள் இருந்தால் மட்டுமே விண்ணப்பங்கள் ஏற்றுக் கொள்ளப்படும்.



महान संत शिव भक्त – तमिल नायनमार

कुलच्चिरै नायनार

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार, कोवै, तमिलनाडु



जन्म से भक्ति के प्रति अभिरुचि सबमें नहीं रहती
जन्म से नाथ को जानना समझना सबसे नहीं होता
जन्म लिये थे कुलच्चिरै नायनार शिव की कृपा रहा
बचपन से बने रहे शिव भक्त शिव के प्रिय भक्त
पांड्य राज्य के मणमेलकुडि गाँव का नाम था वह
पांड्य राज्य के उस स्थान में जन्म ले पाये थे महान
बचपन से ही बनी रही भक्ति शिव थे सबसे महान
शिव शिव शिव शिव नाम सदा भजता मन इनका ।



माणिक्कवासग नायनार ने बनाया था एक मंदिर
जगदीश्वर मंदिर नाम था शिव का अपना मंदिर
बचपन से जाते रहे भक्त का धर्म ये अपनाते रहे
जगदीश्वर महेश्वर परमेश्वर का नाम ये लेते रहे
बडे हुए जब भी बढने लगी थी भक्ति वह भी बढी
शिव भक्तों में भी शिव को पाने की बनी रही प्रीति
हर चीज में शिव को देखना शिव भक्तों को मानना
हर रूप से कुलच्चिरैयार बने महानतम शिव भक्त ।



अपने गुण से अति तीव्र बुद्धि से बन गये थे मंत्री
पांड्य राजा निन्ड्रसीर नेडुमारण के ये प्रधान मंत्री
पांड्य राज्य हर रूप से मान्य रहा गण्य वह ठहरा
प्रजा सुखी थे राजा भी धर्म परायण वीर महान था
हर कहीं शांति पूर्ण रूप से भरी हुई थी लोग सुख थे
आया तभी एक ऐसा हाल जैन के कारण बदला मन
राजा को जैन धर्म अच्छा लगने लगा मानने लगा वह
राजा के कारण प्रजा को विश्वास होने लगा जैन उसपर ।

मंगयरकरसि रानी थी पांड्य देश की थी वह महारानी
शिव को सबकुछ माननेवाली महान गुणवती महारानी
राजा का यह रूप और यह नया विचार सही न लगा
शिव की आराधना कम हो जाने पर उसका मन दुखा
प्रधान मंत्री से वह अपनी चिंता प्रकट की उपाय करने
महान तिरुज्ञानसंबंध नायनार को लाने का निश्चय हुआ
एक बार शिव का नाम हर घर में हर मन में लाना था
दोनों उनसे मिलने गये जब वे राज्य के पास पधारे थे ।



राजा निन्ड्रसीर नेडुमारन बीमार पडा बहुत दुखी हुआ
पेट दर्द से पछताने लगा वह अपना जान खोने तैयार था
शिव को भूलने का वह दंड बन गया राजा दुखी बना
मिलकर राजा से भस्म दिये थे महान तिरुज्ञानसंबंधर
मिट गया दर्द तुरंत अति स्वस्थ हो गया राजा भरपूर
शिव का नाम बढने लगा मंदिर अनेक तब बनने लगा
शिव महिमा का गायन प्रजा करने लगी खुशी ठहरी
शिव मार्ग को अपनाकर रानी वह भी बहुत खुशी ठहरी ।

शिव नाम उसे सदा अपनाकर जीते रहे कुलच्चिरैयार
शिव भक्तों की सेवा कर अपने आपको धन्य पाये
चित्त में शिव को भरकर हर काम वे करने लगे नित
तन मन में शिव को अपनाकर जीने लगे वे सुखद
शिव भक्तों का करने लगे थे वे आदर सत्कार भरपूर
शिव शिव हर हर कह पाने लगे शिव की कृपा भरपूर
शिव शिव हर हर महेश्वर कर जीवन बिताते रहे ये
शिव पद पाकर शिव में मिलकर शिव बने ये भावुक ।

कुलच्चिरैयार महान , सदा लिये शिव नाम ।
महान भक्ति अपनाकर, पाये शिव के धाम ।।



खुले में शौच ना ना ना

– श्री. गोपेंद्र कु सिंहा गौतम,
औरंगाबाद, बिहार

प्रत्येक दिन, सुबह–शाम,
दोनों वक्त नियमपूर्वक
पक्के शौचालय में ही
तुम शौच जाना हाँ ।
खुले में शौच ना ना ना,
बीमारियों को बुलाना ना ।

हर हाल में घर, विद्यालय में,
कार्यस्थल पर बने शौचालय का
ही उपयोग तुम करना हाँ ।
सड़क किनारे शौच ना ना ना,
गाँव–शहर का नाक कटवाना ना ।

खुले में शौच ना ना ना,
बीमारियों को बुलाना ना ।

अच्छी आदत डाल कर,
अपने परिवेश को
स्वच्छ–सुंदर बनाना हाँ ।
खेत–गली में शौच ना ना ना,
अपने इज्जत का बाटा लगाना ना ।
खुले में शौच ना ना ना,
बीमारियों को बुलाना ना ।

शौचालय उपयोग के
बहुत सारे हैं फायदे,
उसे आसपास के
लोगों को गिनवाना हाँ ।
आरी–मेड़–पगडंडी पर शौच ना ना ना,
कीड़े–मकोड़े का खतरा मोल लेना ना ।

खुले में शौच ना ना ना,
बीमारियों को बुलाना ना ।

अपनी इज्जत,अपने हाथ
मत दो तुम गलत का साथ ।
जिस तन को छुपा कर रखते
उसका इज्जत तुम रखना हाँ ।
कभी भी बाहर में शौच ना ना ना
इज्जत की धज्जियाँ उड़ाना ना ।

खुले में शौच ना ना ना,
बीमारियों को बुलाना ना ।

चुन्नी–मुन्नी,सोनू–मोनू
कान खोलकर सुन लो मेरी बात,
जिसे खुले में शौच के लिए जाते देखो
उसे शौचालय का याद दिलाना हाँ ।
झाड़ी–झुरमुट की ओट में शौच ना ना ना
वातावरण में गंदगी–दुर्गंध फैलाना ना ।

खुले में शौच ना ना ना,
बीमारियों को बुलाना ना ।

कुंडलिया छंद

– श्री. विमल कुमार,
पूर्णियाँ, बिहार



– 01 –

लगता होली का नशा, अब लाएगा रंग !
कहो नहीं बूढ़ा हुआ, क्यों करता हुड़दंग ?
क्यों करता हुड़दंग, प्रेम रस नशा चढ़ाया ।
जो चाखे रस प्रेम, सुप्त ज्ञान ये जगाया ।।
महान कवि सब संत, चाहत नशा में रमता ।
पाते परमानन्द, साधना में जो लगता ।।

– 02 –

होली फागुन का करे, प्रेम सरिस श्रृंगार ।
अब तो आ जाओ सखे, कर ले मुझसे प्यार ।।
कर ले मुझसे प्यार, साथ छोड़ नहीं जाना !
भूलें कड़वी बात, प्रेम वादा न भुलाना ।।
रंग लगा ले गाल, सुना दे मीठी बोली ।
अब चल मेरे संग, मनाएँ मिलकर होली ।।



गुझिया

– श्री. बद्री प्रसाद
वर्मा अनजान,
गोरखपुर, उ.प्र.

आता जब होली का त्यौहार
गुझिया की याद आ जाती ।
मम्मी मेरी बड़े प्यार से
गुझिया घर में मनाती ।
मैदा सुजी चीनी मावा
काजू किसमिस बादाम मिलाती ।
तलकर इसे कड़ाही में
सबको खूब खिलाती ।

बच्चों और बड़ो के मन को
गुझिया बहुत है भाती ।
सारी मिठाईयाँ में मन को
गुझिया बहुत है भाती ।

होली पर तो घर घर में
गुझिया खूब बन जाती ।
इस गुझिये की शान
होली में खूब बढ़ जाती ।



अग्नि

– श्री. रमेश कुमार सोनी,
रायपुर,छत्तीसगढ़

– 1 –
पवित्र अग्नि
सात फेरों की साक्षी
गाँठें जोड़ती ।

– 2 –
पलाश–वन
लाली दमक रही
जेठ की गर्मी ।

– 3 –
गुलमोहर
दहका रहा सूर्य
निखार रहा ।

– 4 –
आग सी बोली
घर, रिश्ते–फूँकती
राख समेटो ।

– 5 –
पुस के यात्री
आग तापते बैठे
आम्र कुञ्ज में ।

– 6 –
क्रोध की ज्वाला
शांति–समिधा डालें
बैर का स्वाहा ।

– 7 –
आग का गोला
नभ में ही अच्छा है
डरे–वसुधा ।

– 8 –
क्षुधा की आग
उम्मीद ताक रही
चूल्हे की आग ।

– 9 –
मन की आग
बैरी सुलगा गया
सूझा तो बुझा ।

– 10 –
आग सर्वत्र
जीवन साँसे लेता
सभी प्राणी में ।

– 11 –
दीप जो जले
सिर में आग धरे
रोशनी बाँटे ।

– 12 –
नववधू को
अग्निस्नान कराती
दहेज़ दुष्टा ।

– 13 –
भोर मुस्काता
रात की सत्ता मिटा
सूर्य की ज्वाला ।

– 14 –
माँ की रसोई
अग्नि साधना जाने
भूख मिटाने ।

– 15 –
माचिस चुप
आग लगाना जाने
बुरे का बुरा ।

– 16 –
चुगली–आग
पड़ोस, रिश्ते ख़ाक
सुने, बोलें क्यों ?

– 17 –
श्मशान–अग्नि
शुभ नहीं मानते
मोक्ष की ज्वाला !

– 18 –
लाशों की आग
सियासी कीड़े तापे
खिचड़ी पके ।

– 19 –
भूख की आग
राजनीति की रोटी
वादों का राग ।

– 20 –
जेठ की आग
लू की सवारी चली
लपटें उठी ।

– 21 –
जाँच की आँच
भ्रष्टाचार की आग
सब फँसेंगे ।

– 22 –
भरी बारिश
अग्निबाण द्युति का
वाह जी मेघा ।

– 23 –
दंगे की आग
हाथ सेंकते लोग
सत्ता की गली ।

– 24 –
प्रतिक्षाग्नि है
सावन का विरह
वर्षा भी डरी ।

– 25 –
यज्ञ की अग्नि
सनातनी संस्कृति
सर्व हितार्थ ।

– 26 –
आग भड़की
लाल–पीला हो जाती
सब लीलती ।

– 27 –
दावाग्नि फैली
बचाने में लगी है
हाथी–सवारी ।

– 28 –
जेठ हँसता
पलाश का जौहर
सूर्य काँपता ।

– 29 –
नौतपा की लू
प्यास बड़ी चीज है
पानी ले उड़ी ।



श्रम

– डॉ. त्रिलोकी सिंह, प्रयागराज, उ.प्र.

बिना परिश्रम,
जीवन भर पछताओगे ।
श्रम करके ही,
जीवन में सुख पाओगे ।।

कठिन डगर हो,
फिर भी कदम बढ़ाना है ।
मुश्किल में भी,
तनिक नहीं घबराना है ।।

साहस से यदि,
आगे बढ़ते जाओगे ।
श्रम करके ही,
जीवन में सुख पाओगे ।। 1 ।।

असफलता में,
मत निराश हो जाना तुम ।
पीड़ा में भी,
फूलों–सा मुस्काना तुम ।।

लक्ष्य–प्राप्त कर,
ऊँचा नाम उठाओगे ।
श्रम करके ही ,
जीवन में सुख पाओगे ।। 2 ।।

सपने सारे,
श्रम से पूरे होते हैं ।
श्रम से मानव,
बीज प्रगति के बोते हैं ।।

श्रम के बल पर,
जीवन धन्य बनाओगे ।
श्रम करके ही,
जीवन में सुख पाओगे ।। 3 ।।

श्रम करने से,
अनुदिन भाग्य चमकता है ।
मानव–जीवन,
कुन्दन–सदृश दमकता है ।।

श्रम को यदि तुम,
जीवन भर अपनाओगे ।
श्रम करके ही,
जीवन में सुख पाओगे ।। 4 ।।

दिलों में प्यार भरो । सबसे प्यार करो ।



अम्बेडकर

– श्री. भूपसिंह
'भारती',
महेन्द्रगढ़, हरियाणा

– 1 –
अंबेडकर,
ऊँच नीच को सहा,
जीवन भर ।

– 2 –
अंबेडकर,
छुआछूत का दंश,
झेला जबर ।

– 3 –
अंबेडकर,
घोर जाति भेद का
पिया जहर ।

– 4 –
अंबेडकर,
मनुवाद की खूब,
खोदे कबर ।

– 5 –
अंबेडकर,
कर गए उजाला,
तम को हर ।

– 6 –
अंबेडकर,
सबकी भलाई की
करें फिकर ।

– 7 –
अंबेडकर
कानून के राज से
मेटा कहर ।

– 8 –
अंबेडकर,
समता आजादी के
थे पक्षधर ।

– 9 –
अंबेडकर
वैज्ञानिक सोच की
एक लहर ।

– 10 –
अंबेडकर,
संविधान लिख के,
हुए अमर ।

– 11 –
अंबेडकर
जुल्म के विरोध का
नाम दीगर ।

– 12 –
अंबेडकर,
एक बदलाव के
थे हस्ताक्षर ।

– 13 –
सब थे मग्न
भीमराव–सा मिला
भारत रत्न ।

– 14 –
वंदन करें,
डॉ. अंबेडकर को
नमन करें ।



खुशी

– श्री. मोहित.जे. संतोष,
श्री रामकृष्ण कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस, कोवै, तमिलनाडु

इससे ज्यादा क्या है ?
इससे बेहतर भी क्या है ?
इसे प्राप्त करना है सही
इसी के पीछे पडे हैं सभी ।

तेरा मन है नायक तू है
तुम महसूस करोगे कब ?
तेरा मन ही तेरा वरदान
तुझे बनाता है यह महान ।

कारण के पीछे कभी मत पडो
नियम इसका तुम मत बनाओ
तुम ही हो तेरे मन का नायक
बात इसे सदा तुम याद रखो ।

खुशी बनी रही है तेरी छाया
खुशी नहीं बनेगी कभी माया
अपने सपनों के पीछे भागो
अपना नायक स्वयं बन जाओ ।



गरिमामयी - नारी

– डॉ. पी.आर. वासुदेवन शेष,
चेन्नै, तमिलनाडु

जननी पद की शोभा तुम
इस सृष्टि की अदभुत रचना तुम
क्रांति की जलती मशाल तुम
प्रगति-पथ की प्रदर्शक तुम ।।
पृथ्वी का श्रृंगार बनी तुम
अप्रितम सौंदर्य की आभा तुम
निविड़ निशा के अँधकार में
हर क्षण हँसती-मुस्कुराती तुम ।।
दामन में हों कितने ही काँटे
फूलों की महकती तुम
अनगिनत तपों की रानी
सबका साथ निभाती तुम ।।
कर्मशील नर को बनाकर
इस उपलब्धि की प्रेरणा तुम
खुशहाल जीवन का गीत तुम्हीं से
उमंग तरंग की वर्ष तुम ।।
असह पीड़ी का विषपान कर
अमृत पान कराती तुम
रिश्ते-नातों की पहचान तुम्हीं से
ममता की सच्ची अनुभूति तुम ।।
जीजाबाई, लक्ष्मीबाई, वेलु नाचियार,
कित्तुर चेन्नमा वीरांगना तुम
मानवता और प्रेम की अनूठी
जीती जागती प्रमाण तुम ।।
तुम्हें करता है नमन देश ये
भारतीयता का सम्मान हो तुम ।।



वृद्ध की जिम्मेदारी

– श्री. चन्द्रकांत खुंटे 'क्रांति',
जांजगीर, छत्तीसगढ़

एक व्यक्ति वृद्ध हो गया था
देह से दुर्बल असहाय
किंतु गृह की जिम्मेदारी ने
उसे अपाहिज बना दिया है
तभी तो ऐसी उम्र में
निकल पड़ता है काम को
एक पल भी चैन नहीं
न कदम रुकते धाम को ।
वो दुःखों का मारा
रिक्शा को बनाकर सहारा
परिवार पालने को खींचते
एक छोर से दूसरे किनारा
रोकने से भी नहीं रुकते
न चाहकर भी खाँसते-थूकते
अस्थमा को रोकने हेतु
ठौर-ठौर बैठते-झुकते ।
उधर गृह में नन्हे पौत्रों का लोचन
बहू की विलापती कारुणिक रोदन
अंतस को झकझोर देती है
खाट में पड़ी भार्या की क्रंदन ।
सोचते बीच-बीच में आराम करे
अंतिम समय में विश्राम करे
पर सूत के असमय चले जाने से
कैसे चंचल मन पर लगाम धरे ?



इश्तिहार

– डॉ. मंजु रुस्तगी,
चेन्नै, तमिलनाडु

कहते हैं सब... बदल रही हूँ मैं
हाँ, मैं अब बदल गई हूँ...
लगते हैं किसी पार्टी के चुनाव-चिन्ह
की तरह बिंदी और सिंदूर सो,
नहीं करती हूँ प्रदर्शन इनका
सिर पर घर कर ।
न ही धारती हूँ मंगलसूत्र...
पालतू जानवर के गले में पड़ा हुआ
पट्टा-सा लगता है मुझे ।
एक अरसा हुआ
काँच की चूड़ियाँ पहने
क्योंकि जो है समाज के लिए
कायरता की प्रतीक
मेरी सक्षम कलाइयों ने
उन्हें कर दिया है बहिष्कृत ।
न ही पहनती हूँ
पायल और बिछुए
जब-तब मेरे बढ़ते कदमों में उलझ
जाते हैं, वजह-बेवजह बजकर
मेरी खामोशी में खलल डालते हैं ।
चुभते हैं बहुत
अक्सर दर्द के साथ
एक निशान छोड़ जाते हैं ।
हाँ... ! अब मैं बदल गई हूँ ।
मैं रहना चाहती हूँ
'मैं' बनकर ही
नहीं होना चाहती
किसी संबंध का
इश्तिहार-सी ।



महिला

– श्री. मनोहर सिंह
चौहान मधुकर,
जावरा, रतलाम, म.प्र.

महिला महिला नहीं होती,
ये होती अवतारी है ।
अपनी जिद्द पर आ जाए तो,
सब पर पड़ती भारी है ।।

*****

वेद पुराण भी गीत गाते,
महिला की छवि न्यारी है ।
सरस्वती लक्ष्मी दुर्गा की,
कथा जाने दुनिया सारी हैं ।।

*****

आज महिला अंतरिक्ष में घूमे,
कहा कम पड़ी आज नारी हैं ।
पत्नी से लेकर प्रधान मंत्री तक
संभालती ये जुम्मेदारी हैं ।।

*****

नर है बिन नारी के सुना,
नारी जगत कल्याण कारी है ।
बिन नारी नहीं चलती दुनिया,
मधुकर कहे बात शुभ कारी है ।।



धरा पावन

– श्री. राजेन्द्र लाहिरी,
पमगढ़, छत्तीसगढ़

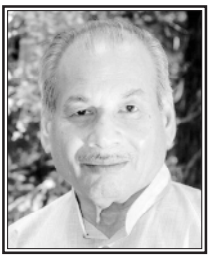
मन में भ्रम की धारणा बनाए बैठे हैं कि
स्थान विशेष की धरा होती है पावन,
तब एक परिपाटी निकल पड़ती है और
लोग पहुँचते हैं जान जगह मनभावन,
पृथ्वी के किसी जगह को हम
पावन अपावन के रूप में नहीं बाँट सकते,
हर स्थल से निकल सकते हैं
महामानव, महापुरुष खास जगह नहीं
छाँट सकते,
खेल प्रकृति के निराले हैं
कहीं भी चमत्कार दिखा सकते हैं,
वो प्रकृति ही है जो
शोलों को वातावरण में दौड़ा सकते हैं,
कुदरत के इसी खेल को कुछ लोग
चमत्कार या दैवीय शक्ति बताते हैं,
अपनी चतुरता या धूर्तता दिखा
मानसिक जाल बिछा भक्ति कराते हैं,
किसी के जन्मस्थली को,
तो किसी के कर्मस्थली को,
कहने लगते हैं पावन भूल हिय
मर्मस्थली को,
आज का युग पूरी तरह विज्ञान का है,
पर्यावरण के सम्मान का है,
न पड़ो किसी झंझट में मानव
पूरा का पूरा समय ज्ञान का है ।



ओ ! मेरे मीत !

– श्री. मानसींग पारगी 'मान',
दाहोद, गुजरात

ओ ! सुन मेरे मन मीत !
फिर न होगी पहलेवाली रीत ।
जहाँ डीजे खूब बजाते थे,
और अश्लील गाने गाते थे ।
खूब शोर शराबा करते थे,
फिर अपनों से ही लडते थे ।
ओ ! सुन मेरे मन मीत !
फिर न होगी पहलेवाली रीत (1)
जहाँ हर किसी की शादी में,
मिट जाता था बरबादी में ।
वो जूठी शान दिखावे में,
फिर मरता ब्याज की आंधी में ।
ओ ! सुन मेरे मन मीत !
फिर न होगी पहलेवाली रीत (2)
यदि मरण किसी का होता था,
वहाँ मुंडन सभी का होता था ।
दारू माँस का सेवन होता था,
फिर अस्थी विसर्जन होता था ।
ओ ! सुन मेरे मन मीत !
फिर न होगी पहलेवाली रीत (3)
जहाँ आँख मिचौनी करते थे,
कुछ मन्नतें ऐसी करते थे ।
उस मंदिर और दरगाह पर,
फिर गंदी हरकत करते थे ।
ओ ! सुन मेरे मन मीत !
फिर न होगी पहलेवाली रीत (4)



विचारों की खूबसूरती

–श्री. कर्नल आदि शंकर मिश्र 'आदित्य', लखनऊ, उ.प्र.

जिस प्रकार छोटी छोटी आँखे सारा आसमान देखने की ताक़त रखती हैं, वैसे ही जीवन में विषमतायें होने पर, भी ज़िन्दगी खुशनुमा बन सकती है ।

जिसमें जीवन जीने की चाहत होती है, उसके सारे गम खुशी में बदल जाते हैं, जिसमें मुस्कुराने की आदत होती है, उसकी सारी दुनिया जन्नत होती है ।

जीवन खूबसूरत एहसास होता है, किसी की खुशी का कारण बन जाना, अपनी ज़िन्दगी को खुशहाल रखना, औरों का जीवन भी खुशहाल बनाना ।

जीवन के उपरांत मायने ये रखता है मैंने क्या किया है, न कि क्या पाया है, हमारी प्रवीणता नहीं, हमारा चरित्र, हमारी सफलता नहीं, हमारा महत्व ।

ढेरों फूल मिलकर पुष्पहार बनाते हैं, दीपक, बाती मिल आरती सजाते हैं, कई नदियों के जल से सागर बनता है, स्त्री के समर्पण से घर स्वर्ग बनता है ।

मानव जीवन में उसके आचार एवं व्यवहार वह दर्पण होते हैं, जिनके द्वारा उसकी खुद की छवि का प्रदर्शन उसे स्वयं होता रहता है ।

विचारों की अच्छाइयाँ कहीं से मिलें उन्हें स्वीकार करना अच्छा होता है, क्योंकि शारीरिक खूबसूरती उम्र के साथ ही बदलती व घटती रहती है ।

विचारों की खूबसूरती तो हमेशा लोगों के हृदय में घर कर जाती है, जीवन पर्यंत ही नहीं आदित्य जीवन के उपरांत भी कायम यह रहती है ।

வாணி விகாஸ் தேர்வு

ஏப்ரல்-2025 முதல் தேர்வு கட்டண விபரம்

தேர்வின் பெயர்	கட்டணம்	தேர்வின் பெயர்	கட்டணம்
வாணி விகாஸ் நிலை-1	₹ 250.00	வாணி விகாஸ் நிலை-5	₹ 290.00
வாணி விகாஸ் நிலை-2	₹ 260.00	வாணி விகாஸ் நிலை-6	₹ 300.00
வாணி விகாஸ் நிலை-3	₹ 270.00	வாணி விகாஸ் நிலை-7	₹ 310.00
வாணி விகாஸ் நிலை-4	₹ 280.00	வாணி விகாஸ் நிலை-8	₹ 320.00



आत्म-कथ्य

– डॉ. श्वेता
दीप्ति, काठमांडू,
नेपाल

मुद्दत बाद तुम मिले थे
उन्हीं राहों पर
जहाँ होती थी अक्सर
हमारी मुलाकात ।
आज मैं न जाने क्यों
खोज रही थी
तुम में ही, तुम्हीं को ।
तुम्हारे बेतरतीब बाल
जो लहराते थे
मेरी यादों में अक्सर
आज वो कुछ संवरे हुए थे
शायद तुम्हारी जिन्दगी की तरह ।
जो हाथ कभी संवारा करते थे
बेतरतीबी से बिखरे अपने बालों को
आज दबी थी उनमें
अधजली सिगरेट
और उनके छल्लों में
छुप रहा था बार-बार
तुम्हारा चेहरा ।
शायद मैं देखना चाहती थी
उस चेहरे में बीते कल को
छूना चाहती थी कुछ पल के निशान
पर वक्त की गर्द कहीं
उस पर भी छा गई थी ।
हाँ ! आज मैं खोज रही थी



जाने कैसा समय भी आया !

–श्री. राजेश पाठक,
गिरिडीह, झारखंड

धूप के अंदर बंद है छाया
जाने कैसा समय भी आया !

लिखा रहे पर कोरा दिखता
कदम-कदम पर रोड़ा दिखता
बूढ़ा ही अब छोरा दिखता
जहाँ लजाना नहीं लजाया
जाने कैसा समय भी आया !

दिखता सब विपरीत यहाँ है
छत के ऊपर भीत यहाँ है
अच्छा भी अब ढीठ यहाँ है
कद छोटा पर बड़ा है साया
जाने कैसा समय भी आया !

फूल खिले पौधा बिन डाली
दूध मिले मक्खन बिन छाली
अमृत बोले लगे कि गाली
खुद ही अब खुद को समझाया
जाने कैसा समय भी आया !



युद्ध चल रहा है

– श्री. सतीश 'बब्बा', चित्रकूट, उ.प्र.

युद्ध चल रहा है,
अशोक सम्राट के,
गौतम बुद्ध के,
जमाने से चल रहा है !
युद्ध चल रहा है,
राम-रावण के,
महाभारत के,
जमाने से चल रहा है !
युद्ध चल रहा है,
आल्हा-ऊदल के,
हल्दीघाटी के,
जमाने से चल रहा है !
युद्ध चल रहा है,
देवासुर संग्राम के,
विश्वयुद्ध के,
जमाने से चल रहा है !
युद्ध चल रहा है,
शीतयुद्ध से भी,
खतरनाक है,
आज जो चल रहा है !
युद्ध चल रहा है,
आज का युद्ध,
बेनाम चल रहा है,
ओट से चोट चल रहा है !
युद्ध चल रहा है,
मानसिक युद्ध ,
सब कोई लड़ रहा है,
अपनों से लड़ रहा है !
युद्ध चल रहा है,
भयंकर परिणाम होंगे,
कलयुगी शकुनि,
दाँव पे दाँव चल रहा है !
युद्ध चल रहा है,
मनुष्य खुद से लड़ रहा है,
मानसिक युद्ध चल रहा है,
विध्वंसक युद्ध चल रहा है !!



नारी

– श्री. सौम्या, कोवै, तमिलनाडु

नारी है नदी बहती रहती
हर मुश्किल को वह पार करती
अपने सपने सच करके दिखाती
रुके बिना वह आगे बढती रहती ।

प्यार देती हिम्मत वह बँधाती
संकट में वह दीपक बन जलती
दुख सहकर वह सदा मुस्काती
अपनी ताकत वह खुद बन जाती
आदर करो उसकी आगे बढने दो
नारी के बिना कुछ नहीं यह जान लो ।

चल नाविक, पतवार चला अब ।



– डॉ. अलका अग्रवाल,
जयपुर, राजस्थान

क्यों डूबा संशय में, बतला ।
राह नहीं निश्चित है कोई ।
कूल दूर है, तय ना मंजिल ।
अब तो बन किश्ती का साहिल ।

चल नाविक, पतवार चला अब ।

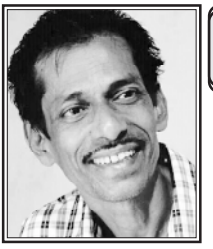
पार उतरना ही है सबको,
नैया खाती है हिचकोले ।
कहीं भँवर में समा न जाए,
डगमग डगमग नैया डोले ।

चल नाविक, पतवार चला अब ।

आए तूफ़ान सभी दिशा से
बिजली चमके, बदरा बोलें ।
बरखा बरस रही है अविरल,
पीपल पात सरिस मन डोले ।

चल नाविक, पतवार चला अब ।

श्री राम



– श्री. प्रभात कुमार धवन,
पटना, बिहार

तुम दशरथ कौशल्या नन्दन,
केकई, सुमित्रा के प्यारे ।
सीता के करूणानिधान,
जनक-सुनैना के तारे ।

सूर्यवंशी, धनुषधारी,
ताड़का को मारे ।
चन्द्रमुकुट पीताम्बरधारी,
भक्तों के रखवाले ।

तुलसी की नेत्र ज्योति तुम,
शबरी के सपने ।
सुग्रीव के धर्मबन्धु तुम,
महावीर के अपने ।

लंका में मेघनाद पछाड़ा,
रावण का अन्त कर डाला ।
मुक्त हुई जगजननी जानकी,
सहज हुई सब जीवन धारा ।

हे श्री राम कर्मक्षेत्र में,
तुमने जो हमें ज्ञान दिया ।
भारत ही क्या, सारे जग पर,
तुमने यह उपकार किया ।



विश्व रंगमंच दिवस

– श्री. संजय एम तराणेकर, इन्दौर, म.प्र.

रंगमंच पर निभा रहें किरदार... !

सजा है विश्व के पटल में रंगमंच,
सभी निभा रहें किरदार कर संच ।
हरेक पड़ाव से गुजर रहीं जिन्दगी,
एक-दूसरे के साथ करती बन्दगी ।
कुछ ही कलाकार कर देते गन्दगी,
सब सही करते विधाता दिल्लगी ।

सजा है विश्व के पटल में रंगमंच,
सभी निभा रहें किरदार कर संच ।
ईश्वर ने भी क्या रचा है ये संसार,
सबके दामन में भरपूर दिया प्यार ।
कब किसके हिस्से में आ जाये हार,
कभी खुलते रहेंगे किस्मत के द्वार ।

सजा है विश्व के पटल में रंगमंच,
सभी निभा रहें किरदार कर संच ।
गुजरती गई जिन्दगी देखते ख्वाब,
करते रहे अभिनय झाड़ते है रुबाब ।
यूँ एक-दूजे का मिलता रहा सहवास,
बुझती रही प्यास, खिलते रहें गुलाब !
जीवन चलता रहें अदाकारी हैं शबाब ।



आदरणीय को सादर प्रणाम ।

मार्च माह 2025 के प्रति प्राप्त हो गई एवं पत्रिका का अवलोकन अच्छी तरह से किया, पढ़ा । एक से बढ़कर एक बेहतरीन पठनीय सामग्री के साथ तमिलनाडु के बहुत सारे रचनाकारों की अति सुंदर सार्थक सराहनीय रचना है । किशोरवय के रचनाकारों में भी हिन्दी भाषा को सीखने और हिन्दी में कुछ करने की जिज्ञासा महसूस होती है ।

संपादकीय तो कमाल की है । ऐसे दृढ़ प्रतिज्ञ, धैर्यवान, गुणवान, पत्रकार संपादक महोदय को मेरा सादर प्रणाम । वहाँ की सरकार के हिन्दी भाषा विरोध के वावजूद इन्होंने हिन्दी की गुणवत्ता का जो बखान किया है, वह प्रशंसा की सीमा से परे है । भाषा भाषा है, भाषा में बाधा नहीं ।

हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार, उत्थान के लिए दृढ़संकल्पबद्ध निडर, निर्भीक, सत्यनिष्ठ पत्रकारिता एवं प्रकाशक की बदौलत तमिलनाडु में हिन्दी भाषा का राजनीतिक दलों के द्वारा विरोध के बावजूद इस पत्रिका का अनवरत प्रकाशन, प्रसारण होता रहा है ।

अत: आप सभी हिन्दी प्रेमियों से करबद्ध प्रार्थना है कि इस पत्रिका को एकबार अवश्य पढ़ें और इस पत्रिका के लिंक पर ही अपने विचार लिखने का कष्ट करें, ताकि प्रकाशक

महोदय का उत्साहवर्धन हो सके ।

नोट :- पत्रिका की जो प्रति भेज रहे हैं उसके ऊपरी हिस्से में अंगुली सटाने पर पीडीएफ इत्यादि दो-तीन लिंक में से किसी को खोलकर पूरी पत्रिका पढ़ सकते हैं ।

अंत में पुनः स्तवन निवेदन ।

आपके द्वारा प्रेषित पत्रिका शबरी मार्च 2025 का अवलोकन किया । बहुत अच्छी पत्रिका है अच्छे स्तर के लेख कविता का प्रकाशन किया जाता हैं मैं अपने विचार साहित्य कविता आदि भेजूँगा । इसके प्रकाशित होते रहने के लिए शुभकामनाएँ व बधाई स्वीकारें आदरणीय ।

- डॉ. राजेश तिवारी मक्खन,
झाँसी, उ.प्र.

सादर अभिवादन श्रीधर जी । हिन्दी के प्रति आपकी निष्ठा शबरी पत्रिका के माध्यम से प्राप्त होती रहती है । आपका यह सराहनीय कार्य प्रणम्य है ।

शबरी शिक्षा समाचार पत्रिका के कैनवास पर हिन्दी के लेख कविता कहानियों के विविध रंग भर सुंदर चित्रों सहित हम लोगों को समर्पित कर रहे है । आपकी साहित्य सेवा को नमन करता हूँ ।

- श्री. सुनील प्रकाश भारद्वाज,
लखनऊ, उ.प्र.

नवांकुर



नाच

- लक्षिता श्रीधर,
ग्यारहवीं कक्षा, एमराल्ड वैली पब्लिक स्कूल, सेलम, तमिलनाडु

आज हम नाचने के फायदों के बारे में बात करेंगे । नाचना सिर्फ एक मनोरंजन ही नहीं बल्कि यह शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी बहुत फायदेमंद होती है । नियमित रूप से नाचने से शरीर के वजन कम होता है, शरीर बहुत ही ज्यादा लचीला बनता है और मन से तनाव कम होकर शांति मिलती है । नाच एक मजेदार और मनोरंजक गतिविधि है जो आपको खुश और ऊर्जावान महसूस कराती है । नाचने से त्योहार की मज़ा बढ़ती है और परिवार की नजदीकियाँ भी बढ़ती है । इसीलिए नाचने से खुशियाँ भी बढ़ती है और शरीर का भी फायदा होता है ।

नवांकुर- रचनाएँ आमंत्रित

रचयिता की आयु 21 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए । रचना मौलिक व अप्रकाशित होनी चाहिए । खड़ीबोली हिन्दी का प्रयोग करें । रचना 50 से 150 शब्दों में होनी चाहिए हैं ।

कृपया आयु प्रमाण-पत्र की प्रति साथ भेजें ।



जीवन

– प्रजित. जे. संतोष,
सी.ऐ.टी. कॉलेज, कोवै,
तमिलनाडु

नन्हा प्यार बन जन्म लिया
प्रसन्न चित्त हो मुस्कान सहित
माँ हाथ थामे बढने लगा वह
पिता के समान बनने के लिए
कितना सुखद दौर है जीवन ?
स्कूल जाने लगा सुखद होकर
नए नए दोस्त मिले यहाँ वहाँ
खूब निकले दिन हँसी सहित
विद्यालय ले गया महाविद्यालय
फिर हुआ नौकरी का अरुणोदय ।
परिवार के लिए दौडता है
परिवार अपना बसा पाता है
पहुँच जाता है वह अंतिम चरण
पाना चाहता है वह शांति तब
अपना कर्तव्य सब निभाकर
अपना लेता है वह महाप्रयान ।



पानी की कांच

– शंकर वेंकटेश्वरन,
श्री कृष्णा आर्ट्स एंड साइंस
कॉलेज़, कोवै, तमिलनाडु

एक कक्षा में, सारे विद्यार्थियों ने अध्यापक से पूछा कि हर एक को अपने जिंदगी में बहुत ही ज्यादा मुश्किल और कठिन समस्या होते रहते हैं । इसके लिए अध्यापक ने सारे विद्यार्थियों को एक कहानी सुनाया था । एक पानी की कांच को हाथ में पकड़ कर पूछा कि, इसका वज़न कितना है ? सब ने जवाब दिया कि सिर्फ थोड़ा वजन हो सकती है । अध्यापक ने समझाया कि, सच में इसका महत्व उसका वजन नहीं है, इसकी महत्व यही है कि मैं इसको मैं अपने हाथों में कितनी देर तक पकडता हूँ । अगर मैं इसको 1 मिनट पड़ रहा था तो कुछ नहीं होगा । अगर 1 घंटे तक पड़ रहा था तो मेरे हाथ में दर्द होने शुरू हो जाएँगे । अगर मैं इसको 1 दिन पर पड़ रहा था तो मेरे हाथ दर्द में बिगड़ जाएगी । इस कांच की वजन नहीं बदलता है लेकिन मैं इसको कितनी देर तक पकड़ रहा हूँ, उसकी वजन ऐसे बदलती है । अध्यापक ने ऐसे समझाया कि, वैसे ही हमारी जिंदगी में, बहुत ही संकट आते रहती है । एक संकट के बारे में कम समय सोचा तो कुछ नहीं होगा, लेकिन जब हम इनके बारे में बहुत देर तक सोचा तो वह हमारे मन को बदमाशी करना शुरू हो जाएगी । इसलिए हम अपने संकट को बहुत देर तक हाथ में पकड़ के रखना ना सोचिए, उसके नीचे छोड़ना या नीचे रखना सीख लीजिए ।

– श्रीमती. अलमेलु कृष्णन, चेन्नै, तमिलनाडु

पठितम्, अभिरुचितम्, अनूदितम्

सच्चिदानन्दः प्रज्ञा

एकः आचार्यः आसीत् । तस्य समीपे बहवः छात्राः अधीतवन्तः । सर्वे उत्तमाः विद्वान् आसन् । एकः छात्रः सर्वेभ्यः अपेक्षया चतुरः सिद्धः अभवत् । सः प्रतिदिनं अविचलेन उत्साहेन नूतनानि वस्तूनि शिक्षयति स्म । अनेन तत्रत्यानां सर्वेषां छात्राणां मध्ये सः श्रेष्ठः अभवत् । आचार्यः तस्मै व्यक्तिगतं प्रेम्णः, ध्यानं च दत्तवान् ।

किञ्चित्कालं व्यतीतम् । तस्मिन् छात्रे बहवः परिवर्तनाः प्रादुर्भवितुं आरब्धाः । सः सर्वान् अवमाननापूर्वकं द्रष्टुम् आरब्धवान् । सः स्वतः ज्येष्ठानां छात्राणां अपि आदरं न करोति । वरिष्ठछात्रान् अन्येषां बहूनां पुरतः कठिनं प्रश्नं पृष्टति स्म । उत्तरम् अज्ञातम् इति दृष्ट्वा सः तालीवादनं कृत्वा हसति स्म, यावत् ते लज्जया रोदिति तावत् तान् उपहासयितुं प्रवृत्तः ।

एषः विषयः आचार्यस्य कर्णयोः प्राप्तः अस्ति । एषः दम्भः तस्य छात्रस्य नाशं करिष्यति इति सः अवगच्छत् । सः न इच्छति यत् उत्तमः छात्रः नष्टः भवेत् । सः स्वस्य त्रुटिं ज्ञापयितुम् इच्छति स्म । यदि भवन्तः तस्मै प्रत्यक्षं उपदेशं ददति तर्हि सः अन्धदम्भे अपि स्वस्य विरोधं कर्तुं शक्नोति । तस्मात् सः अन्यं मार्गं चिन्तितवान् ।

परदिने आचार्यः तं छात्रं आहूतवान् । ''पुत्र ! अद्य प्रातःकाले समीपस्थग्रामस्य मम एकः मित्रः मृतः । सः तर्क शास्त्रस्य प्रकांड पंडित:आसीत् । सः द्विशताधिकपुस्तकानां लेखकः अस्ति ।

अपि तु दशवारं सर्वकारेण उत्कृष्टविद्वानपुरस्कारं प्राप्तवान् । अनेकेषु विदेशेषु अपि तस्य छात्राः सन्ति । परे वीथिकायां स्थितस्य काष्ठकारस्य समीपं गत्वा तस्मै विवरणं वदतु, भवन्तं गुणवत्तापूर्णं शवपेटिं निर्मातुं च वदतु । अद्य अपराह्णे तस्य अन्त्येष्टिः निर्धारिता अस्ति । ''केवलं त्वमेव समीचीनं एतत्

कर्तुं शक्नोषि'' इति सः अवदत् । अन्ते आचार्येण उक्तं प्रशंसा शब्दाः महतीं उत्साहं जनयति स्म । ''अहं तत्क्षणमेव पूर्तीं करिष्यामि महोदय'' इति उक्त्वा सः सत्वरं काष्ठकारस्य गृहं प्रति अगच्छत् ।

काष्ठकारः तं स्वागतं कृत्वा पृष्टवान् यत् सः किमर्थम् आगतः इति । मध्याह्नपर्यन्तं गुणवत्तापूर्णं शवपेटी आवश्यकम् इति सः उक्तवान् । काष्ठकारः मृतस्य विषये विवरणं याचितवान् । छात्र; अपि यथा शिक्षकः अवदत्, सः तर्कशास्त्रस्य निपुणः अस्ति । ''सः द्विशताधिकानि पुस्तकानि लिखितवान् । सः दशवारं सर्वोत्तमविद्वान् इति सर्वकारस्य पुरस्कारं प्राप्तवान् । तस्य अनेकेषु विदेशेषु अपि छात्राः सन्ति...'' तस्य वचनं समाप्तुं पूर्वमेव काष्ठकारः क्रुद्धो भूत्वा ''अद्य त्वं केवलं अहमेव भवतः मनोरञ्जनं कर्तुं प्रयतसे वा ? भवान् शिक्षितः अस्ति वा ?'' केवलं मृतशरीरस्य विवरणं वद, अन्यत् किमपि मा वद ! सः अवदत् ।

एषः प्रश्नः छात्रं क्रुद्धं कृतवान् । ''यदि त्वं वदसि यत् एतावता विवरणानंतरमपि तं न अवगच्छसि तर्हि त्वं पूर्णतया मूर्खः असि'' इति सःअवदत् । काष्ठकारः ''अहो, मूढ़ ! त्वं कियत् अपि अधीतवान्, कियत् अपि पुरस्कारं प्राप्तवान्, मम कृते एतत् शवमेव । अहं यत् इच्छामि तत् शरीरस्य ऊर्ध्वतां विस्तारं च । यत् किमपि पठसि तत् केवलं तावत्कालं यावत् भवतः शरीरे ऊर्जा अस्ति । यदि त्वं पेटी इच्छसि तर्हि गत्वा तत् मापनं कृत्वा आगच्छ'' इति । छात्रः कुत्रचित् कठिनतया आहतः अभवत् ।

''किं मानवज्ञानस्य विस्तारः एषः एव ? किम् एतावता मया एतावन्तः जनाः अपमानिताः ?'' सः लज्जितः अभूत् । संकोचेन मन्दं मन्दं गत्वा आचार्यस्य पुरतः स्थितवान् । आचार्यः हसन् पृष्टवान् – ''किम् ! त्वया शवपेटिकां आहतवान् ?'' छात्रः प्रत्युवाच । ''आहतम् अहो, मम अहंकारः आहतम् । आचार्यः अवदत्, वत्स ! ''भवन्तः किमपि अध्ययनं कुर्वन्तु, एतत् शरीरं नाशवानेव । शरीरस्य विनाशानन्तरं तस्य शरीरस्य मूल्यं न भविष्यति । एतत् अवगत्य विनयेन व्यवहारं कर्तव्यम् । तदेव सत्य प्रज्ञा अस्ति... !''

தமிழமுது – தேசத்தோடு ஒட்டி வாழ்

– **எம். ஸ்ரீதர்,** நிறுவனர் : சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான், சேலம், தமிழ்நாடு

பெற்ற தாயும் பிறந்த பொன்னாடும் நற்றவ வானினும் நனி சிறந்ததுவே ... என்றார் மகாகவி பாரதியார். தன்னை ஈன்றெடுத்த தாயும் தான் பிறந்து வளரும் தாய்நாடும் சொர்க்கத்தை விட மேலானவை என்று கூறுகிறார் மகாகவி பாரதியார். தாயும் தாய் நாடும் இரண்டு கண்கள் என்று போற்றுகின்றனர் தேசபக்தர்கள். தாயை வணங்காதவன், தாயின் மேல் அன்பு செலுத்தாதவன் மனிதனாக இருக்கும் மாண்புகளை இழந்தவன். தன்னுடைய தாயைப் போற்றுகின்றவன் தான் பிறந்த தாய் நாட்டையும் போற்றி வாழ்பவன். ஊருடன் ஒத்துவாழ் என்பது நம்முடைய தமிழ் பழமொழி. தன்னுடைய சமூகத்தோடு தன்னுடைய நாட்டையும் ஒருவன் நேசிக்க தொடங்கும்போது அவனுடைய வாழ்க்கையானது மிகவும் வளர்ச்சி உடையதாகவும், மகிழ்ச்சியுடையதாகவும் மாறுகிறது. தாய் நாட்டை நேசிப்பவன் தவறுகள் எதுவும் செய்யாமல் நன்மைகளை மட்டுமே செய்யக்கூடிய நல்லவனாக வாழ தொடங்குகிறான் எனவே தேசபக்தி என்பது மனிதனுக்கு மிகவும் முக்கியமானது.

நம்முடைய முன்னோர்கள் தேசபக்தியையும் தெய்வ பக்தியையும் இரண்டு கண்களாகக் கொண்டு நல்வழியை மேற்கொண்டு வாழ்ந்து வந்தனர். தன்னுடைய தாய் நாட்டின் மீது பற்றற்றவன் நல்ல வழியில் இருந்து விலகி தீமையை நோக்கி செல்கிறான். தாய் நாட்டை வணங்குபவனும் தாய் நாட்டிற்காக வாழ்கின்றவனும் நாட்டிற்காகவும் மனித குலத்திற்கு ஆகவும் பல நல்ல காரியங்களை செய்து மகிழ்கிறான். தேசத்தோடு ஒட்டி வாழும் போது அந்த தேசத்தில் வசிக்கக்கூடிய அனைவரையும் தன்னுடையவர்களாக கருதிக் கொண்டு, அனைவரின் நலனுக்காகவும் பாடுபட தொடங்குகிறான்.

ஒரு மனிதன் எவ்வளவு நல்லவனாக இருந்தாலும் தன்னுடைய நாட்டின் மேல் அவனுக்கு அன்பும் பாசமும் இல்லாவிடில் அவனால் நெடு நாட்களுக்கு நல்லவனாக வாழ முடியாது. அவனுடைய சுயநலமானது அவனை தீய வழிக்கு எடுத்துச் செல்லும். நாட்டை நேசிக்கின்ற ஒவ்வொருவனும் தன்னுடைய குணத்தையும் தன்னுடைய செயலையும் கவனித்து நல்லபடியாக யாருக்கும் துன்பமில்லாமல் தன்னுடைய செயல்களை செய்து முடிக்கிறான். தேசத்தோடு ஒட்டி வாழ்பவன் ஒருபோதும் பிறருக்கு தீங்கு இணைப்பதில்லை. எனவே தான் நமது ஔவையில் பாடியவர்கள் **தேசத்தோடு ஒட்டி வாழ்** எனக்கூறி சென்று இருக்கிறார். தன்னுடைய தேசத்தின் மீது பற்று இல்லாமல் வாழ்கின்றவன் விலங்கினும் கீழானவன். தேசத்தை காப்போம் தேசத்தை வணங்குவோம் தேசத்திற்காக வாழ்ந்து விடுவோம் ஜெய்ஹிந்த்.

தொடரும்...



அருள் உலா
திருமுறைத் திருத்தல யாத்திரை
திருக்கடவூர் மயானம்

- கயிலைத்திருவடி 'யுவதூத்'

Dr. **என். சந்திரசேகர்,** M.A., B.Ed., Ph.D., சேலம், தமிழ்நாடு



வேழம் உரிப்பர் மழுவாளர்
வேள்வி அழிப்பர் சிரமறுப்பர்
ஆழி அளிப்பர் அரிதனக்கன்
றானஞ் சுகப்பர் அறமுறைப்பர்
ஏழைத் தலைவர் கடவூரில்
இறைவர் சிறுமான் மறிக்கையர்
பேழைச் சடையர் மயானத்துப்
பெரிய பெருமான் அடிகளே.

- ஸ்ரீ சுந்தரர் அருளிய
7-ஆம் திருமுறை

திருமெய்ஞானம், ஆதிக்கடவூர் என்றெல்லாம் சிறப்பிக்கும் பெருமைக்கு உரிய திருமுறைத் திருத்தலமாகிய திருக்கடவூர்மயானம், காவிரி தென்கரைத் தலங்களில் 48ஆவது அருட்தலம் ஆகும்.

அருள் வரலாறு :

ப்ரளயகாலத்தில் ப்ரம்மா உள்ளிட்ட தேவர்கள் அனைவரின் ஆயுளும் முடிவுக்கு வரும். அதுசமயம் ஸ்ரீ சிவபெருமான் பிரம்மனை எரித்துச் சாம்பலாக்குகிறார். பிறகு பிரளயம் அடங்கியபிறகு, பிரம்மதேவனை மீண்டும் படைத்து அவருக்குப் படைப்புத் தொழிலுக்குத் தேவையான அனைத்து ஞானங்களையும் உபதேசிக்கிறார். அந்த ஞானத்தின் அடிப்படையில் பிரம்மதேவன் தமது படைப்புத் தொழிலைக் குறைவின்றி நிறைவாகச் செய்கின்றார்.

இவ்வாறு ஒரு கல்பகால முடிவில் இந்தத் திருத்தலத்தில் ஸ்ரீ பரமேஷ்வரன் பிரம்மதேவனை எரித்துச் சாம்பலாக்கிப் பிறகு அவரை உயிர்ப்பித்து ஞான உபதேசம் செய்து படைப்புத் தொழிலைச் செய்யும்படி அருளாணையிட்டார்.

மயானம், மெய்ஞானம் :

இவ்வாறாக ஸ்ரீ சிவபெருமான் பிரம்மதேவனை எரித்துச் சாம்பலாக்கியதால் இந்தத் தலம் திருமயானம் எனவும், மீண்டும் அவரை உயிர்ப்பித்து சிவஞான உபதேசம் அருளியதால் திருமெய்ஞானம் எனவும் இந்த திவ்யத்தலம் சிறப்பிக்கப்படுகின்றது.

சிறப்புக்கள் :

1. இந்தத் தலத்துத் தல விநாயகர் ஸ்ரீ ப்ரணவ விநாயகர் ஆவார்.
2. இத்திருக்கோயிலில் உள்ள காசித் தீர்த்தத்தில் இருந்து தான் தினமும் திருக்கடையூர் அமிர்தகடேஷ்வரருக்கு அபிஷேக நீர் எடுத்துச் செல்லப்படுகின்றது.
3. சைவம் போற்றும் ஐந்து மயானத் தலங்களுள் இதுவும் ஒன்று. மற்ற நான்கு - காசி மயானம், கச்சி மயானம் (காஞ்சீபுரம்), காழி மயானம் (சீர்காழி). நாலூர் மயானம் ஆகியவை ஆகும்.
4. மேற்கு பார்த்த சிவஸ்தலங்களுள் இதவூம் ஒன்று.
5. இந்தத் தலம் எமபயம், எமவாதனை போக்கும் அருட்தலம் ஆகும்.
6. இத்திருக்கோயிலில் முருகர், சிங்காரவேலர் என்ற திருநாமத்துடன் கையில் வில்லும் அம்பும் கொண்டு காலில் பாதக்குறடு அணிந்து காட்சி தருகிறார். மேலும் இங்கு முருகன் திருமாலின் அம்சமாக, மாமனைப்போல மருமகன் என்று கொண்டாடப்படுகிறார்.
7. சிவபெருமானுக்கு இருப்பதுபோலவே, முருகன் சந்நிதிக்கு ஒருபுறம் குஹ சண்டிகேஷ்வரர் என்ற பெயரில் சண்டிகேஷ்வரர் சந்நிதி உள்ளது.
8. மார்க்கண்டேயருக்காக ஒரு பங்குனி மாதம் அஷ்வினி நக்ஷத்திரத்தன்று இத்தலத்து தீர்த்தத்தில் கங்கை ப்ரபவித்த காரணத்தால் ஆண்டுதோறும் இந்த நாளில் பக்தர்கள் புனித கங்கை நீராடி மகிர்கின்றனர். இன்றைய தினம் இந்த தீர்த்தத்தில் நீராடினால் திருமணத் தடை நீங்குவது அனுபவம். ஆண்டுக்கு ஒரநாள் மட்டுமே இந்தத் தீர்த்தத்தில் புனித நீராட அனுமதி வழங்கப்படுகிறது.
9. இத்தலத்து ஈசன் ஸ்ரீ ப்ரம்மபுரீஷ்வரருக்கு திருக்கோயில் உள்ளே உள்ள காசி தீர்த்தத்தால் அபிஷேகம் நடைபெறுவது இல்லை. ஏன் கங்கையில் இருந்தே தீர்த்தம் கொண்டு வந்தாலும் அதனால் அபிஷேகம் கிடையாது. பாஹ்லீகன் என்ற மன்னன் இத்தலத்து காசி தீர்த்தம் கொண்டு மூலவர் ப்ரம்மபுரீஷ்வரருக்கு அபிஷேகம் செய்வித்தான். இதனால் சிவலிங்கத்தின் உச்சியில் வெடிப்பு ஏற்பட்டது. அதனால் உண்டான தழும்பை இன்றும் காணலாம்.
10. இத்திருக்கோயிலில் தஷிணாமூர்த்தி 6 சீடர்களுடன் திருக்காட்சி தருகிறார்.
11. சோழ மற்றும் பாண்டியர் காலத்து கல்வெட்டுகள் 16 இந்தக் கோயிலில் உள்ளன.



ஸ்ரீ ஸ்வாமி - ஸ்ரீ அம்பாள் :

இறைவன் : ஸ்ரீ ப்ரம்மபுரீஷ்வரர்
இறைவி : ஸ்ரீ நிமல குஜாம்பிகை

தலமரம் : கொன்றை
தீர்த்தம் : பிரம்ம தீர்த்தம், காசி தீர்த்தம்
வழிபட்டு அருள் பெற்றோர் : பிரம்மா, மார்க்கண்டேயன் முதலானோர்.

அருட்பதிகங்கள் :

ஸ்ரீ ஞான சம்பந்தர், ஸ்ரீ நாவுக்கரசர், ஸ்ரீ சுந்தரர் முதலான மூவராலேயும் பாடப்பட்ட சிறப்பிற்கு உரியது இந்தத் திருத்தலம்.

தரிசன காலம் : காலை 06.30 மணி - பகல் 1.00 மணி வரை
மாலை 04.00 மணி - இரவு 07.00 மணி வரை

திருக்கோயில் முகவரி : ஸ்ரீ பிரம்மபுரீஷ்வரர் திருக்கோயில்,
திருமயானம், ஆதிகடவூர், திருக்கடையூர் - 609 311.
நாகப்பட்டிணம் மாவட்டம்.

தொடர்புத் தொலைபேசி எண்கள் : 9442012133, 04364-287429

அமைவிடம் :

திருக்கடவூர் மயானம் தேவாரப் பாடல் பெற்ற திருத்தலமானது மயிலாடுதுறையில் இருந்து சுமார் 25 கி.மீ. தொலைவில் உள்ள திருக்கடையூர் ஸ்ரீ அமிர்தகடேஷ்வரர் திருக்கோயிலில் இருந்து சுமார் 2 கி.மீ. தொலைவில் உள்ளது. காரைக்காலில் இருந்தும் வரலாம்.

ஸ்ரீ நிமலகுஜாம்பா ஸமேத
ஸ்ரீ பிரம்மபுரீஷ்வர பரப்ரஹ்மணே நம:

... அருள் உலா தொடர்கிறது.

இணைந்திடுங்கள்...
இணைத்திடுங்கள்
இதயங்களை...

அன்பார்ந்த வாசகர்களே,

உள்ளத்தையும் எண்ணத்தையும் உயர்த்தும் படைப்புகளுடன் ஹிந்தி, தமிழ், சமஸ்கிருதம் ஆகிய மும்மொழிகளில் வருகிறது சபரி சிக்ஷா சமாச்சார் பத்திரிக்கை. ஆண்டுச் சந்தா ₹100/- அல்லது ஆயுள் சந்தா (20 வருடம்) ₹1000/- செலுத்தி இந்த இலக்கியப் பயணத்தில் நீங்களும் இணையலாம். நண்பர்களுக்கும், உறவினர்களுக்கும், மாணவர்களுக்கும் இந்த நல்ல பத்திரிக்கையை பரிசளியுங்கள்.

Send MONEY ORDER or DD to
SHABARI SIKSHA SANSTHAN,
194, 2nd Agraharam, SALEM-636001. TN
PHONE : 9842765414

SHABARI SIKSHA SAMACHAR, SALEM

Form IV (See Rule 8)

Statement about ownership and other particulars about Shabari Siksha Samachar (according to Form IV. Rule 8 circulated by the Registrar of Newspaper for India).

1.	Place of Publication	:	Salem - 636 001
2.	Periodicity of its Publication	:	Monthly
3.	Printer's Name	:	D. Sivakumar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636 001.
4.	Publisher's Name	:	M. Sridhar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	37, First Agraharam, Salem - 636 001.
5.	Editor's Name	:	M. Venkateswaran
	Nationality	:	Indian
	Address	:	197, Second Agraharam, Salem - 636 001.
6.	Name & Address of the individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than 1 % of the capital	:	M. Sridhar Owner & Publisher 37, First Agraharam, Salem - 636 001.

I, M. Sridhar, hereby declare the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd.

Date : 05.04.2025. **M. Sridhar**
Signature of the Publisher

JOIN Vani Vikas

Spoken Hindi Examination

Learn Spoken Hindi In Simplest Way

வாணி விகாஸ் தேர்வுகள்

வாய்மொழி தேர்வு

முயன்றால் முடியாதது எதுவுமில்லை
முடங்கிக் கிடந்தால் எது முடியும் ?
எழுந்து நடந்தால் இமயமும் படியும்
மொழியொன்று கற்றால் வழியொன்று
மொழிகள் பலகற்றால் பல வழியுண்டு
வாருங்கள் சபரியுடன் வழிகாட்டுகிறோம்
வருங்காலம் வளமாகிட வழிகாட்டுகிறோம்
வாருங்கள் வாணிவிகாஸில் சேருங்கள்
ஹிந்தியை இதயபூர்வமாய் பேசிட வாருங்கள்



- **Eight** Graded Levels
- No Previous Hindi Qualifications
- Certificate Issued For Each Level

Shabari Siksha Sansthan, 193, Second Agraharam, Salem - 636 001.

Posted at Salem HPO 636 001. April - 2025

Published on 5th April - 2025

Posted on 6th & 7th of every month. R.N.I. No. : TNMUL/1999/00402
Postal Reg. No. :TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024 - 2026
Licenced to post without prepayment: TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024-2026

कृपया सभी पत्र व्यवहार में अपनी सदस्यता संख्या का अवश्य उल्लेख करें ।
அனைத்து கடித போக்குவரத்துகளிலும் தங்களுடைய உறுப்பினர் எண்ணை தவறாமல் குறிப்பிடவும்.
Please quote your subscription number in all correspondance.
If undelivered please return to
Shabari Siksha Samachar,
A.O. 194, Second Agraharam, Salem - 636 001

To

DON'T TEAR THE LABEL IF UNDELIVERED

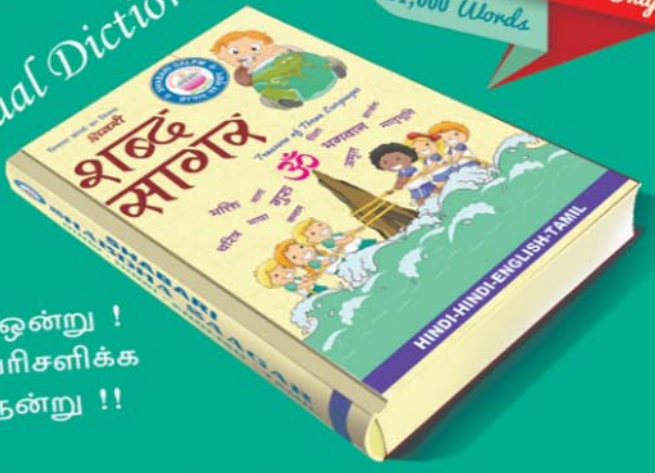
Shabari Shabdha Saagar

Trilingual Dictionary

Just ₹ 750.00 Only

1632 Pages

51,000 Words



ஹிந்தி
ஹிந்தி
ஆங்கிலம்
தமிழ்
அகராதி

தமக்காக ஒன்று !
பிறர்க்கு பரிசளிக்க
மிகவும் நன்று !!

கற்போர் கற்பிப்போரின்
சொல் வளம் பெருகிட
ஹிந்தியோடு தமிழும் ஆங்கிலமும்
தங்களின் நுனி விரலில் தவழ்ந்திட
51,000 சொற்களின் அணிவகுப்பு
சபரியின் தரமானதோர் படைப்பு

வாழ்க்கை பயனுற வானம் வசப்பட
வார்த்தைகளால் வளம் பெற்று சிறந்திட